

Universitätsbibliothek Wuppertal

M. Tullii Ciceronis Opera Omnia

Cicero, Marcus Tullius

Basileæ, MDCLXXXII

Liber nonus

Nutzungsrichtlinien Das dem PDF-Dokument zugrunde liegende Digitalisat kann unter Beachtung des Lizenz-/Rechtehinweises genutzt werden. Informationen zum Lizenz-/Rechtehinweis finden Sie in der Titelaufnahme unter dem untenstehenden URN.
Bei Nutzung des Digitalisats bitten wir um eine vollständige Quellenangabe, inklusive Nennung der Universitätsbibliothek Wuppertal als Quelle sowie einer Angabe des URN.

[urn:nbn:de:hbz:468-1-1133](#)

M. T VELII CICERONIS
EPISTOLARVM
LIBER NONUS,
AD
ATTICUM.

CICERO ATTICO, 5

Ts 1, cum tu has litteras legeres, putabam
fote, ut leitem jam, quid Brundisii astum
esset; nam i Canusio VIII. KAL. pro-
fectus erat Cnaus, hæc autem scriberbam
pridie Nonas xiiij. die postquam ille
Canusio moverat) tamen angebar singu-
laturum horarum exspectatione: mirabar
que, nihil allatum esse ne rumor quidem. nam erat mi-
xum silentium, sed hæc soitasse x̄v̄r̄s̄d̄ sunt: quæ
tamen jam sciantur, necesse est: illud molestum me ad-
huc investigate non posse, ubi P. Lentulus nostrar sit, ubi
Domitius, quæro autem, quod facilius scire possim, quid
asturi sint; 4. iurare ad Pompejum; &, si sunt, quæ quan-
doever ituri sunt, urbem quidem jam referunt est: optimam
audio; Solum & Lupum, quos Cnaus nostra rante
putabat Brundisium veniuros esse, quām fē, ju: dicere,
hic vero vulgo vadunt. etiam M. Lepidus, quocum diem
conterere solebant, cras cogitabant, nos autem in Formia-
no morabamus, quo ciuitas audiremus: deinde Arpinum
volebamus. inde, iter qua maximè & amissimè esset,
ad mare superum, remotis, sive omnino missi historibus,
audio enī, bonis viris, qui & nunc, & sape antea rvgno
præsidio & cip. & fuerunt, hanc cunctationem nostram non
probata & multaque in me, 8 & severè in ciuiis tempes̄tr̄is
quides disputati, cedamus igitur; &, ut boni cives si-
mus bellum italic terra, marique inferamus; & odia im-
proditorum rursus in nos, quæ jam extincta erant, incen-
dens, & Lucejī consilia, ac Theophani persequamur,
ut Scipio vel in Syriam proficisciatur, forte, vel cum ge-
nero, honeste, vel Cæstare fugit, iratum, Marcelli qui-
hem, nisi gladium Cæsaris timuissent, manerent. Ap-
pius & eodem timore, & inimicitarum resentient: & ta-
men, præter hunc, & C. Cassium, reliqui legati; 9 Fau-
sius Procurator: ego unus, cui urtum licet: frater
accederet; quem fœsum hujus fortuna esse, non erat
sacrum: cui magis eriam Cæsar ira cereceret, sed im-
petus non possum, ut maneat. dabimus hoc Pompejo,

congit legendum, Preprater, etiam si, prequaesiter, retinere malit.
10. Accederit,) Vulg accersit. Man. malit arcedis, cum in antiquis li-
brie, accedens, ferendum sit.

II. Irascerentur. Vulg. irascitur.

12. *Ubi sunt bice dantes.*) Alterum non absit à vulg.
 13. *III. Nonas veteris* ~~et huius~~ *ad hanc*) Sub ipsam accessionem

febris. Hæc emendatio Vtq. prius legebatur III. Nonne Mart. 1000 r̄fū
dēsīlū, reliquæ editiones, illud quidem dēsīlū in 2dīgīnū

14. Quod sibi placet.] Vulg. quod tibi ipse placet.
15. Nec fari est.] Vulg. ut fari esse.

12. *Hoc tempore.* Hæc duo vocabula dicit Faern. L. A. x.

11. 24. 1898 - 1. 22. 1899 - 2. 18. 1900 - 3. 15. 1901 - 4. 12. 1902 - 5. 10. 1903 - 6. 7. 1904 - 7. 5. 1905 - 8. 2. 1906 - 9. 20. 1907 - 10. 17. 1908 - 11. 14. 1909 - 12. 11. 1910 - 13. 8. 1911 - 14. 5. 1912 - 15. 2. 1913 - 16. 19. 1914 - 17. 6. 1915 - 18. 3. 1916 - 19. 10. 1917 - 20. 7. 1918 - 21. 4. 1919 - 22. 1. 1920 - 23. 8. 1921 - 24. 5. 1922 - 25. 2. 1923 - 26. 9. 1924 - 27. 6. 1925 - 28. 3. 1926 - 29. 10. 1927 - 30. 7. 1928 - 31. 4. 1929 - 32. 11. 1930 - 33. 8. 1931 - 34. 5. 1932 - 35. 2. 1933 - 36. 9. 1934 - 37. 6. 1935 - 38. 3. 1936 - 39. 10. 1937 - 40. 7. 1938 - 41. 4. 1939 - 42. 1. 1940 - 43. 8. 1941 - 44. 5. 1942 - 45. 2. 1943 - 46. 9. 1944 - 47. 6. 1945 - 48. 3. 1946 - 49. 10. 1947 - 50. 7. 1948 - 51. 4. 1949 - 52. 1. 1950 - 53. 8. 1951 - 54. 5. 1952 - 55. 2. 1953 - 56. 9. 1954 - 57. 6. 1955 - 58. 3. 1956 - 59. 10. 1957 - 60. 7. 1958 - 61. 4. 1959 - 62. 1. 1960 - 63. 8. 1961 - 64. 5. 1962 - 65. 2. 1963 - 66. 9. 1964 - 67. 6. 1965 - 68. 3. 1966 - 69. 10. 1967 - 70. 7. 1968 - 71. 4. 1969 - 72. 1. 1970 - 73. 8. 1971 - 74. 5. 1972 - 75. 2. 1973 - 76. 9. 1974 - 77. 6. 1975 - 78. 3. 1976 - 79. 10. 1977 - 80. 7. 1978 - 81. 4. 1979 - 82. 1. 1980 - 83. 8. 1981 - 84. 5. 1982 - 85. 2. 1983 - 86. 9. 1984 - 87. 6. 1985 - 88. 3. 1986 - 89. 10. 1987 - 90. 7. 1988 - 91. 4. 1989 - 92. 1. 1990 - 93. 8. 1991 - 94. 5. 1992 - 95. 2. 1993 - 96. 9. 1994 - 97. 6. 1995 - 98. 3. 1996 - 99. 10. 1997 - 100. 7. 1998 - 101. 4. 1999 - 102. 1. 2000 - 103. 8. 2001 - 104. 5. 2002 - 105. 2. 2003 - 106. 9. 2004 - 107. 6. 2005 - 108. 3. 2006 - 109. 10. 2007 - 110. 7. 2008 - 111. 4. 2009 - 112. 1. 2010 - 113. 8. 2011 - 114. 5. 2012 - 115. 2. 2013 - 116. 9. 2014 - 117. 6. 2015 - 118. 3. 2016 - 119. 10. 2017 - 120. 7. 2018 - 121. 4. 2019 - 122. 1. 2020 - 123. 8. 2021 - 124. 5. 2022 - 125. 2. 2023 - 126. 9. 2024 - 127. 6. 2025 - 128. 3. 2026 - 129. 10. 2027 - 130. 7. 2028 - 131. 4. 2029 - 132. 1. 2030 - 133. 8. 2031 - 134. 5. 2032 - 135. 2. 2033 - 136. 9. 2034 - 137. 6. 2035 - 138. 3. 2036 - 139. 10. 2037 - 140. 7. 2038 - 141. 4. 2039 - 142. 1. 2040 - 143. 8. 2041 - 144. 5. 2042 - 145. 2. 2043 - 146. 9. 2044 - 147. 6. 2045 - 148. 3. 2046 - 149. 10. 2047 - 150. 7. 2048 - 151. 4. 2049 - 152. 1. 2050 - 153. 8. 2051 - 154. 5. 2052 - 155. 2. 2053 - 156. 9. 2054 - 157. 6. 2055 - 158. 3. 2056 - 159. 10. 2057 - 160. 7. 2058 - 161. 4. 2059 - 162. 1. 2060 - 163. 8. 2061 - 164. 5. 2062 - 165. 2. 2063 - 166. 9. 2064 - 167. 6. 2065 - 168. 3. 2066 - 169. 10. 2067 - 170. 7. 2068 - 171. 4. 2069 - 172. 1. 2070 - 173. 8. 2071 - 174. 5. 2072 - 175. 2. 2073 - 176. 9. 2074 - 177. 6. 2075 - 178. 3. 2076 - 179. 10. 2077 - 180. 7. 2078 - 181. 4. 2079 - 182. 1. 2080 - 183. 8. 2081 - 184. 5. 2082 - 185. 2. 2083 - 186. 9. 2084 - 187. 6. 2085 - 188. 3. 2086 - 189. 10. 2087 - 190. 7. 2088 - 191. 4. 2089 - 192. 1. 2090 - 193. 8. 2091 - 194. 5. 2092 - 195. 2. 2093 - 196. 9. 2094 - 197. 6. 2095 - 198. 3. 2096 - 199. 10. 2097 - 200. 7. 2098 - 201. 4. 2099 - 202. 1. 2020 - 203. 8. 2021 - 204. 5. 2022 - 205. 2. 2023 - 206. 9. 2024 - 207. 6. 2025 - 208. 3. 2026 - 209. 10. 2027 - 210. 7. 2028 - 211. 4. 2029 - 212. 1. 2023 - 213. 8. 2024 - 214. 5. 2025 - 215. 2. 2026 - 216. 9. 2027 - 217. 6. 2028 - 218. 3. 2029 - 219. 10. 2023 - 220. 7. 2024 - 221. 4. 2025 - 222. 1. 2026 - 223. 8. 2027 - 224. 5. 2028 - 225. 2. 2029 - 226. 9. 2023 - 227. 6. 2024 - 228. 3. 2025 - 229. 10. 2026 - 230. 7. 2027 - 231. 4. 2028 - 232. 1. 2029 - 233. 8. 2023 - 234. 5. 2024 - 235. 2. 2025 - 236. 9. 2026 - 237. 6. 2027 - 238. 3. 2028 - 239. 10. 2029 - 240. 7. 2023 - 241. 4. 2024 - 242. 1. 2025 - 243. 8. 2026 - 244. 5. 2027 - 245. 2. 2028 - 246. 9. 2029 - 247. 6. 2023 - 248. 3. 2024 - 249. 10. 2025 - 250. 7. 2026 - 251. 4. 2027 - 252. 1. 2028 - 253. 8. 2029 - 254. 5. 2023 - 255. 2. 2024 - 256. 9. 2025 - 257. 6. 2026 - 258. 3. 2027 - 259. 10. 2028 - 260. 7. 2029 - 261. 4. 2023 - 262. 1. 2024 - 263. 8. 2025 - 264. 5. 2026 - 265. 2. 2027 - 266. 9. 2028 - 267. 6. 2029 - 268. 3. 2023 - 269. 10. 2024 - 270. 7. 2025 - 271. 4. 2026 - 272. 1. 2027 - 273. 8. 2028 - 274. 5. 2029 - 275. 2. 2023 - 276. 9. 2024 - 277. 6. 2025 - 278. 3. 2026 - 279. 10. 2027 - 280. 7. 2028 - 281. 4. 2029 - 282. 1. 2023 - 283. 8. 2024 - 284. 5. 2025 - 285. 2. 2026 - 286. 9. 2027 - 287. 6. 2028 - 288. 3. 2029 - 289. 10. 2023 - 290. 7. 2024 - 291. 4. 2025 - 292. 1. 2026 - 293. 8. 2027 - 294. 5. 2028 - 295. 2. 2029 - 296. 9. 2023 - 297. 6. 2024 - 298. 3. 2025 - 299. 10. 2026 - 300. 7. 2027 - 301. 4. 2028 - 302. 1. 2029 - 303. 8. 2023 - 304. 5. 2024 - 305. 2. 2025 - 306. 9. 2026 - 307. 6. 2027 - 308. 3. 2028 - 309. 10. 2029 - 310. 7. 2023 - 311. 4. 2024 - 312. 1. 2025 - 313. 8. 2026 - 314. 5. 2027 - 315. 2. 2028 - 316. 9. 2029 - 317. 6. 2023 - 318. 3. 2024 - 319. 10. 2025 - 320. 7. 2026 - 321. 4. 2027 - 322. 1. 2028 - 323. 8. 2029 - 324. 5. 2023 - 325. 2. 2024 - 326. 9. 2025 - 327. 6. 2026 - 328. 3. 2027 - 329. 10. 2028 - 330. 7. 2029 - 331. 4. 2023 - 332. 1. 2024 - 333. 8. 2025 - 334. 5. 2026 - 335. 2. 2027 - 336. 9. 2028 - 337. 6. 2029 - 338. 3. 2023 - 339. 10. 2024 - 340. 7. 2025 - 341. 4. 2026 - 342. 1. 2027 - 343. 8. 2028 - 344. 5. 2029 - 345. 2. 2023 - 346. 9. 2024 - 347. 6. 2025 - 348. 3. 2026 - 349. 10. 2027 - 350. 7. 2028 - 351. 4. 2029 - 352. 1. 2023 - 353. 8. 2024 - 354. 5. 2025 - 355. 2. 2026 - 356. 9. 2027 - 357. 6. 2028 - 358. 3. 2029 - 359. 10. 2023 - 360. 7. 2024 - 361. 4. 2025 - 362. 1. 2026 - 363. 8. 2027 - 364. 5. 2028 - 365. 2. 2029 - 366. 9. 2023 - 367. 6. 2024 - 368. 3. 2025 - 369. 10. 2026 - 370. 7. 2027 - 371. 4. 2028 - 372. 1. 2029 - 373. 8. 2023 - 374. 5. 2024 - 375. 2. 2025 - 376. 9. 2026 - 377. 6. 2027 - 378. 3. 2028 - 379. 10. 2029 - 380. 7. 2023 - 381. 4. 2024 - 382. 1. 2025 - 383. 8. 2026 - 384. 5. 2027 - 385. 2. 2028 - 386. 9. 2029 - 387. 6. 2023 - 388. 3. 2024 - 389. 10. 2025 - 390. 7. 2026 - 391. 4. 2027 - 392. 1. 2028 - 393. 8. 2029 - 394. 5. 2023 - 395. 2. 2024 - 396. 9. 2025 - 397. 6. 2026 - 398. 3. 2027 - 399. 10. 2028 - 400. 7. 2029 - 401. 4. 2023 - 402. 1. 2024 - 403. 8. 2025 - 404. 5. 2026 - 405. 2. 2027 - 406. 9. 2028 - 407. 6. 2029 - 408. 3. 2023 - 409. 10. 2024 - 410. 7. 2025 - 411. 4. 2026 - 412. 1. 2027 - 413. 8. 2028 - 414. 5. 2029 - 415. 2. 2023 - 416. 9. 2024 - 417. 6. 2025 - 418. 3. 2026 - 419. 10. 2027 - 420. 7. 2028 - 421. 4. 2029 - 422. 1. 2023 - 423. 8. 2024 - 424. 5. 2025 - 425. 2. 2026 - 426. 9. 2027 - 427. 6. 2028 - 428. 3. 2029 - 429. 10. 2023 - 430. 7. 2024 - 431. 4. 2025 - 432. 1. 2026 - 433. 8. 2027 - 434. 5. 2028 - 435. 2. 2029 - 436. 9. 2023 - 437. 6. 2024 - 438. 3. 2025 - 439. 10. 2026 - 440. 7. 2027 - 441. 4. 2028 - 442. 1. 2029 - 443. 8. 2023 - 444. 5. 2024 - 445. 2. 2025 - 446. 9. 2026 - 447. 6. 2027 - 448. 3. 2028 - 449. 10. 2029 - 450. 7. 2023 - 451. 4. 2024 - 452. 1. 2025 - 453. 8. 2026 - 454. 5. 2027 - 455. 2. 2028 - 456. 9. 2029 - 457. 6. 2023 - 458. 3. 2024 - 459. 10. 2025 - 460. 7. 2026 - 461. 4. 2027 - 462. 1. 2028 - 463. 8. 2029 - 464. 5. 2023 - 465. 2. 2024 - 466. 9. 2025 - 467. 6. 2026 - 468. 3. 2027 - 469. 10. 2028 - 470. 7. 2029 - 471. 4. 2023 - 472. 1. 2024 - 473. 8. 2025 - 474. 5. 2026 - 475. 2. 2027 - 476. 9. 2028 - 477. 6. 2029 - 478. 3. 2023 - 479. 10. 2024 - 480. 7. 2025 - 481. 4. 2026 - 482. 1. 2027 - 483. 8. 2028 - 484. 5. 2029 - 485. 2. 2023 - 486. 9. 2024 - 487. 6. 2025 - 488. 3. 2026 - 489. 10. 2027 - 490. 7. 2028 - 491. 4. 2029 - 492. 1. 2023 - 493. 8. 2024 - 494. 5. 2025 - 495. 2. 2026 - 496. 9. 2027 - 497. 6. 2028 - 498. 3. 2029 - 499. 10. 2023 - 500. 7. 2024 - 501. 4. 2025 - 502. 1. 2026 - 503. 8. 2027 - 504. 5. 2028 - 505. 2. 2029 - 506. 9. 2023 - 507. 6. 2024 - 508. 3. 2025 - 509. 10. 2026 - 510. 7. 2027 - 511. 4. 2028 - 512. 1. 2029 - 513. 8. 2023 - 514. 5. 2024 - 515. 2. 2025 - 516. 9. 2026 - 517. 6. 2027 - 518. 3. 2028 - 519. 10. 2029 - 520. 7. 2023 - 521. 4. 2024 - 522. 1. 2025 - 523. 8. 2026 - 524. 5. 2027 - 525. 2. 2028 - 526. 9. 2029 - 527. 6. 2023 - 528. 3. 2024 - 529. 10. 2025 - 530. 7. 2026 - 531. 4. 2027 - 532. 1. 2028 - 533. 8. 2029 - 534. 5. 2023 - 535. 2. 2024 - 536. 9. 2025 - 537. 6. 2026 - 538. 3. 2027 - 539. 10. 2028 - 540. 7. 2029 - 541. 4. 2023 - 542. 1. 2024 - 543. 8. 2025 - 544. 5. 2026 - 545. 2. 2027 - 546. 9. 2028 - 547. 6. 2029 - 548. 3. 2023 - 549. 10. 2024 - 550. 7. 2025 - 551. 4. 2026 - 552. 1. 2027 - 553. 8. 2028 - 554. 5. 2029 - 555. 2. 2023 - 556. 9. 2024 - 557. 6. 2025 - 558. 3. 2026 - 559. 10. 2027 - 560. 7. 2028 - 561. 4. 2029 - 562. 1. 2023 - 563. 8. 2024 - 564. 5. 2025 - 565. 2. 2026 - 566. 9. 2027 - 567. 6. 2028 - 568. 3. 2029 - 569. 10. 2023 - 570. 7. 2024 - 571. 4. 2025 - 572. 1. 2026 - 573. 8. 2027 - 574. 5. 2028 - 575. 2. 2029 - 576. 9. 2023 - 577. 6. 2024 - 578. 3. 2025 - 579. 10. 2026 - 580. 7. 2027 - 581. 4. 2028 - 582. 1. 2029 - 583. 8. 2023 - 584. 5. 2024 - 585. 2. 2025 - 586. 9. 2026 - 587. 6. 2027 - 588. 3. 2028 - 589. 10. 2029 - 590. 7. 2023 - 591. 4. 2024 - 592. 1. 2025 - 593. 8. 2026 - 594. 5. 2027 - 595. 2. 2028 - 596. 9. 2029 - 597. 6. 2023 - 598. 3. 2024 - 599. 10. 2025 - 600. 7. 2026 - 601. 4. 2027 - 602. 1. 2028 - 603. 8. 2029 - 604. 5. 2023 - 605. 2. 2024 - 606. 9. 2025 - 607. 6. 2026 - 608. 3. 2027 - 609. 10. 2028 - 610. 7. 2029 - 611. 4. 2023 - 612. 1. 2024 - 613. 8. 2025 - 614. 5. 2026 - 615. 2. 2027 - 616. 9. 2028 - 617. 6. 2029 - 618. 3. 2023 - 619. 10. 2024 - 620. 7. 2025 - 621. 4. 2026 - 622. 1. 2027 - 623. 8. 2028 - 624. 5. 2029 - 625. 2. 2023 - 626. 9. 2024 - 627. 6. 2025 - 628. 3. 2026 - 629. 10. 2027 - 630. 7. 2028 - 631. 4. 2029 - 632. 1. 2023 - 633. 8. 2024 - 634. 5. 2025 - 635. 2. 2026 - 636. 9. 2027 - 637. 6. 2028 - 638. 3. 2029 - 639. 10. 2023 - 640. 7. 2024 - 641. 4. 2025 - 642. 1. 2026 - 643. 8. 2027 - 644. 5. 2028 - 645. 2. 2029 - 646. 9. 2023 - 647. 6. 2024 - 648. 3. 2025 - 649. 10. 2026 - 650. 7. 2027 - 651. 4. 2028 - 652. 1. 2029 - 653. 8. 2023 - 654. 5. 2024 - 655. 2. 2025 - 656. 9. 2026 - 657. 6. 2027 - 658. 3. 2028 - 659. 10. 2029 - 660. 7. 2023 - 661. 4. 2024 - 662. 1. 2025 - 663. 8. 2026 - 664. 5. 2027 - 665. 2. 2028 - 666. 9. 2029 - 667. 6. 2023 - 668. 3. 2024 - 669. 10. 2025 - 670. 7. 2026 - 671. 4. 2027 - 672. 1. 2028 - 673. 8. 2029 - 674. 5. 2023 - 675. 2. 2024 - 676. 9. 2025 - 677. 6. 2026 - 678. 3. 2027 - 679. 10. 2028 - 680. 7. 2029 - 681. 4. 2023 - 682. 1. 2024 - 683. 8. 2025 - 684. 5. 2026 - 685. 2. 2027 - 686. 9. 2028 - 687. 6. 2029 - 688. 3. 2023 - 689. 10. 2024 - 690. 7. 2025 - 691. 4. 2026 - 692. 1. 2027 - 693. 8. 2028 - 694. 5. 2029 - 695. 2. 2023 - 696. 9. 2024 - 697. 6. 2025 - 698. 3. 2026 - 699. 10. 2027 - 700. 7. 2028 - 701. 4. 2029 - 702. 1. 2023 - 703. 8. 2024 - 704. 5. 2025 - 705. 2. 2026 - 706. 9. 2027 - 707. 6. 2028 - 708. 3. 2029 - 709. 10. 2023 - 710. 7. 2024 - 711. 4. 2025 - 712. 1. 2026 - 713. 8. 2027 - 714. 5. 2028 - 715. 2. 2029 - 716. 9. 2023 - 717. 6. 2024 - 718. 3. 2025 - 719. 10. 2026 - 720. 7. 2027 - 721. 4. 2028 - 722. 1. 2029 - 723. 8. 2023 - 724. 5. 2024 - 725. 2. 2025 - 726. 9. 2026 - 727. 6. 2027 - 728. 3. 2028 - 729. 10. 2029 - 730. 7. 2023 - 731. 4. 2024 - 732. 1. 2025 - 733. 8. 2026 - 734. 5. 2027 - 735. 2. 2028 - 736. 9. 2029 - 737. 6. 2023 - 738. 3. 2024 - 739. 10. 2025 - 740. 7. 2026 - 741. 4. 2027 - 742. 1. 2028 - 743. 8. 2029 - 744. 5. 2023 - 745. 2. 2024 - 746. 9. 2025 - 747. 6. 2026 - 748. 3. 2027 - 749. 10. 2028 - 750. 7. 2029 - 751. 4. 2023 - 752. 1. 2024 - 753. 8. 2025 - 754. 5. 2026 - 755. 2. 2027 - 756. 9. 2028 - 757. 6. 2029 - 758. 3. 2023 - 759. 10. 2024 - 760. 7. 2025 - 761. 4. 2026 - 762. 1. 2027 - 763. 8. 2028 - 764. 5. 2029 - 765. 2. 2023 - 766. 9. 2024 - 767. 6. 2025 - 768. 3. 2026 - 769. 10. 2027 - 770. 7. 2028 - 771. 4. 2029 - 772. 1. 2023 - 773. 8. 2024 - 774. 5. 2025 - 775. 2. 2026 - 776. 9. 2027 - 777. 6. 2028 - 778. 3. 2029 - 779. 10. 2023 - 780. 7. 2024 - 781. 4. 2025 - 782. 1. 2026 - 783. 8. 2027 - 784. 5. 2028 - 785. 2. 2029 - 786. 9. 2023 - 787. 6. 2024 - 788. 3. 2025 - 789. 10. 2026 - 790. 7. 2027 - 791. 4. 2028 - 792. 1. 2029 - 793. 8. 2023 - 794. 5. 2024 - 795. 2. 2025 - 796. 9. 2026 - 797. 6. 2027 - 798. 3. 2028 - 799. 10. 2029 - 800. 7. 2023 - 801. 4. 2024 - 802. 1. 2025 - 803. 8. 2026 - 804. 5. 2027 - 805. 2. 2028 - 806. 9. 2029 - 807. 6. 2023 - 808. 3. 2024 - 809. 10. 2025 - 810. 7. 2026 - 811. 4. 2027 - 812. 1. 2028 - 813. 8. 2029 - 814. 5. 2023 - 815. 2. 2024 - 816. 9. 2025 - 817. 6. 2026 - 818. 3. 2027 - 819. 10. 2028 - 820. 7. 2029 - 821. 4. 2023 - 822. 1. 2024 - 823. 8. 2025 - 824. 5. 2026 - 825. 2. 2027 - 826. 9. 2028 - 827. 6. 2029 - 828. 3. 2023 - 829. 10. 2024 - 830. 7. 2025 - 831. 4. 2026 - 832. 1. 2027 - 833. 8. 2028 - 834. 5. 2029 - 835. 2. 2023 - 836. 9. 2024 - 837. 6. 2025 - 838. 3. 2026 - 839. 10. 2027 - 840. 7. 2028 - 841. 4. 2029 - 842. 1. 2023 - 843. 8. 2024 - 844. 5. 2025 - 845. 2. 2026 - 846. 9. 2027 - 847. 6. 2028 - 848. 3. 2029 - 849. 10. 2023 - 850. 7. 2024 - 851. 4. 2025 - 852. 1. 2026 - 853. 8. 2027 - 854. 5. 2028 - 855. 2. 2029 - 856. 9. 2023 - 857. 6. 2024 - 858. 3. 2025 - 859. 10. 2026 - 860. 7. 2027 - 861. 4. 2028 - 862. 1. 2029 - 863. 8. 2023 - 864. 5. 2024 - 865. 2. 2025 - 866. 9. 2026 - 867. 6. 2027 - 868. 3. 2028 - 869. 10. 2029 - 870. 7. 2023 - 871. 4. 2024 - 872. 1. 2025 - 873. 8. 2026 - 874. 5. 2027 - 875. 2. 2028 - 876. 9. 2029 - 877. 6. 2023 - 878. 3. 2024 - 879. 10. 2025 - 880. 7. 2026 - 881. 4. 2027 - 882. 1. 2028 - 883.

deinde certorem me sui consilii fecit, is queretur Brundisium me non venisse, cum inter me, & Brundisium Caesar esset: deinde, etiam scit, *περιπολασθείσης* esse in ea causa querelam suam. me putat de municipiorum imbecillitate, de delectibus, de urbe, de pecunia, de Piceno occupando plus vidisse, quam se, sī, cum potuero, non venero; tunc ex inimico: quod ego non eō vereor, ne mihi noceat: (quid enim faciet?)

Τέταρτη δούλος, Εὐτέλης ἀφορτεῖ αὐτὸν.)

sed quia ingratis animi crimen horro. confido igitur adveniū nostrum illi, quoquo tempore fuerit, ut scribis, *περιπολασθείσης*. Nam quod aīs, si hic temperantur egerit, consideratus consilium te daturum; qui hic potest te gerere non perditā vita, mores, ante facta, ratio fūlepti negoti, socii, vires bonorum, aut etiam constantia. Vix dum epistolam tuam legeram, cum ad me, currens ad illum, Postumus Curtius venit, nihil nisi classis loquens & exercitus: eripiebat Hispanias; tenebat Asiam, Siciam, Atticam, Sardiniam; confessum in Graeciam persequebatur, eundum igitur est, nec tam ut belli, quam ut fugiū sumus, nec enim ferre potero sermones istorum quicunque sunt, non sunt enim certe, ut appellantur, *βόη*, sed tamen id ipsum scire cupio, quid loquantur, idque ut esquias, meque certiorem facias, te vehementer rogo. Nos adhuc, quid Brundisii actum esset, plane nesciebamus, cum sciebamus, tum ex re, & ex tempore consilium capiemus; sed utemur tuo.

CICERO ATTICO, S.

DOMITII filius transi & Formias VII. ID. currens ad matrem Neapolim, mihique nuntiari suffit, patrem ad iudebesset; cum de eo curiosè quæsisset servus noster Dionysius, nos autem audieramus eum profectum sive ad Pompejum, sive in Hispaniam. id cujusmodi sit, scire sicut velim, nam ad id, quod delibero, pertinet; si ille certènusqua in discessit, intelligere Cnæum, non esse facile nobis ex Italia exitus, cum ea tota armis, praesidiisque tenetur, hieme præsternit. nam si commodius *annus* tempus esset, vel inferno mari licet uti, nunc nihil potest, nisi supero & trahit, quod iter interclusum est, quæres igitur & de Domitio, & de Lentulo. A Brundisio nulla adhuc fama venerat: & era hic dies VII. ID. que die, suplicabamus, aut pridie Brundisium venisse Calarem, nam KAL. Apis manferat. sed si Postumum audire velles, persecutus erat Cnæum, transisse enim jam putabat, condicua tempestatum ac dierum. ego nautas cum non pubebam habiturum: ille confidebat, & eo magis, quod audita naviularis hominis *liberalitas* esset. sed tota res Brundisii jam quo modo habeat se, diutius nescire non possum.

CICERO ATTICO, S.

EGO esti tamdiu requiesco, quamdiu aut ad te scribo, aut tuas litteras lego: tamen & ipse ego argumento

epistolarum, & tibi idem accidere certò scio, quæ enim solito animo familiariter scribi, & solent, temporibus his excluduntur. quæ autem sunt horum temporum, ea jam contrivimus. sed tamen, ne me totum a gritudini dedam, sum si mihi quasdam tangunt *Ιεράς*, quæ & pollicitur sunt, & temporum horum, ut & abducant animum ab querellis, & in eo ipso, de quo agitur, exerceat. ex sunt hujusmodi?

6. Ei πλοτεστον τη πατεριδι τυραννορρήν. Τυραννορρήν δι' αὐτῶν, εἰ παῖς τρόπω τυραννοῦ πατέλν τη περιγραφή της πατεριδού, καὶ ποίη θέρη τέρη πολὺ πολὺς καὶ διωνύσιος. Εἰ πατέλν πατέλν τη πατεριδού, 8 μῆνις αὐτῆς αἴσηται. Εἰ πιπερτεον αργύριον τη πατεριδού τη πατεριδού καὶ πολὺ λόγω μαζίδων, η πολέμων. Εἰ πολέμων τη πατεριδού, καὶ φίλοις τη πατεριδού πολέμων. Εἰ πολέμων πατέλν ποδών τη πατεριδού πολέμων. Εἰ πολέμων πολιορκήσεων 10 ταῦτα πορχυρίδων. Εἰ καὶ μὴ δοκιμάσθε τη πολέμων πολέμων τη πορχυρίδων, συναπορευτεον ὅμως τοῖς ἀριστοῖς. Εἰ τοῖς εὐεργέταις, καὶ φίλοις τη πατεριδού πολέμων πολέμων, καὶ μὴ δοκιμάσθε τη περιβλεψίαν πολέμων τη πατεριδού. Εἰ περιβλεψίαν πολέμων πολέμων τη πατεριδού.

in his ego me consultationibus exercens, & differens in ultramque partem tum Græcè, tum Latinè, & abduco parumper animum à molestiis, & τη περιγραφή της πατεριδού delibe-ro. Sed vereor, ne tibi *ἀναγένεσθαι*, si enim recte & am-bulaverit is, qui hanc epistolam tulit, in ipsum tuum diem incidit.

CICERO ATTICO, S.

NATALLI diutio scriptisti epistolam ad me plenam consilii, summeque cum benevolentia, tum etiam prudentia: eam mihi Philotimus postridie, quæ a te accepserat, reddidit. Sunt ista quidem, quæ disputas, difficilla, iter ad superum, navigatio infero, discussus Arpi-num, ne hunc fugisse; manlio Formiis, ne obtulisse nos gratulationi videatur: sed miserius nihil, quam ea videre, quæ tamen, iam, iam, inquam, videnga erunt. Fuit apud me Postumus: scripti ad te, quam gravis, venit ad me etiam Q. id Fusius, quo *vultu!* quo *spiritu!* prope-rans Brundisium, scelus accusans Pompeji, levitatem & stultitiam Senatus, hac qui in mea villa non ferant, id Curtium in Curia poteranter. Age, fingeme quan-vis *τύπων* hac ferente: quid illa, dicit M. Tu-li, queni habebunt exitum? id omissio causa?

M.m.m. 3 rel-

carissimorum personarum rationem habeat, si dimisisti aduersus potenter concertationibus pro rep.

7. Πρεσβύτερον. Ita repositi Boſ ex veterib. suis editio Vic-torius περιεργετος.

8. Μῆνες αἴσηται. Hoc quoque Boſ partim ex conjectura, partim manuductio corruptim: suorum misericordiis vulgo *τύπων*: quidam τι πολέμων, quidam αργύριον. Vic-tor ex suis *αργύριον* quod plurimi receperunt.

9. Τυραννορρήν καὶ λόγω μαζίδων. Limb. & Boſ reponerunt ex suis mis. ad quam emendatio non proxime accedit hæc Erici Stephan. conjectura: τυραννορρήν καὶ λόγω μαζίδων, εἰ. vulgo *τύπων* μαζίδων, ή. εἰ. quæ ex conjectura Petri Vic-tor, quæ prius haberetur τυραννορρήν μαζίδων.

10. Ταύτων, ή Vulg. αὐτῶν.

11. Ambulaverit is, Vulg. ambulaverit.

12. Fusius, Vulg. Fusius.

13. Curtium in Curia. Ita emendarunt Lamb. & Vir. qui tamen sic defendi possesse cum in Curia.

14. Αναγένεσθαι.

15. Mavult. Man. sed omisste.

16. Quic.

reipubl. quam ego amissam puto cum vulneribus suis, cum medicamentis iis, que parantur. de Pompejo quid agam? cui plane? (quid enim hoc negem?) succensui. SEMPER ENIM CAUZA eventorum magis movent, quam ipsa eventa, hæc igitur mala, (quibus) majora esse que possunt? considerans, vel potius judicans ejus opera accidisse & culpa, inimicior eram huic, quam ipsi Caesar. ut maiores nostri functionem diem esse voluerunt Aliensis pugnare, quam urbis capti; quod hoc malum ex illo, itaque alter religiosus etiam nunc dies, alter in vulgo ignorat; sic ego, decem annorum peccata recordans, in quibus inerat ille etiam annus, qui nos & hoc non defendente, ne dicam gravius, affixerat; præsentisque temporis cognoscens temeritatem, ignaviam, negligentiam, succensabam. sed ea jam mihi exciderunt. beneficia ejusdem cogito; cogito etiam dignitatem, inteligo, seriu equidem, quam vellem, propter epistolas sermonesque Balbi; sed video plane, nihil aliud agi; nihil actum ab initio, quam ut hunc accideret. ego igitur & si quis apud Homerum, cum ei & mater & ea dixisset.

5. Auctio. η τοι επίτη μεσ' Εκπρα πότμος ἐπιμος, matri pse respondit,

6. Auctio. πειθαίνω, ἐπειδή τούτη την πότμον επιμονή: quid, si non επιμονή solum, sed etiam σέργεται? adde, tali viro, talem causam agenti: 7 & ego vero hæc officia mercanda vita puto. optimatus verò tuis nihil confido, nihil iam ne iufervio quidem. video, ut te huic dent, ut datuti sint. quidquam tu illa putas suisse de valitudine decreta municipiorum præ his de victoria gratulationibus? timent, inquieti. at ipsi tum se timuisse dicunt. sed videamus, quid actuū sit Brundisi. 8 ex eo fortasse mea consilia nascuntur, aliaque litteræ.

CICERO ATTICO, S.

• Nos adhuc Brundisio nihil. Roma scripsit Balbus, putare jam Lentulum cos. 9 transmisso, nec eum à minore Balbo coventum; quod is hoc jam Canuiss audisset: inde ad secum scripsisse: cokortesque sex, quæ Alba suffiserint, ro ad Curium via Minucia transire: id Caesarē ad se scripsisse, & brevi tempore eum ad urbem futurum, 11 ego urar tuo consilio; neque me & Arpinum hoc tempore abdā: etiā, Ciceroni meo rogam puram cum date Arpini vellem, hanc etiam ipsam *excusationem* re-

litterus ad Casarem. sed fortasse in eo ipso offendetur, cur non Roma potius. sed tamen, si est convenientius, hic potissimum. tum reliqua videbimus, id est & quo, & quā, & quando. Domitius, ut audio, 13 in Cassino, & quidem, ut ajunt, paratus ad navigandum; si in Hispaniam, non probō: si ad Cazum, laudo: quovis potius certe, 14 quam ut Curtium videt: quem ego patronus aspicere non possum. quid alios? sed, opinor, quietiam; & nostram culpam coarguamus; qui, dum urbem, id est patriam, amamus, dumque rem convertentur putamus, ita nos gessimus, ut plane interclusi capite simus. Scripta jam epistola, Capua littera sunt allata hexempli. Pompejus mate transit cum omnibus militibus, quos secum habuit, hic numerus est hominum milia xxx. & 15 consules duo, & tribuni pl. & senatores, qui fuerunt cum eo, omnes cum uxoribus & liberis. Conscendisse dicitur a. d. iv. Nonas Mart. ex ea die fuit Septemtriones venti. naves, quibus uetus non est, omnes aut prædicti, aut incendiis dicunt, de hac littera L. Metello trib. pl. Capuanam allata sunt ab Clodia Socro, qui ipsa transiit, ante sollicitus eram & angebar, 16 sicut res scilicet ipsa cogebat, cum consilio explicare nihil possem: nunc autem, postquam Pompejus, & consules ex Italia exierunt, non angor, sed ardeo dolore:

17 εἰδέ με την
μεμπτόδη, ἀλλ' 18 ἀλαλόκητης:

non sum, inquam, mihi crede, mentis compos; tantum mihi dedecoris admisisse videor. 19 Mene non primū cum Pompejo, qualicumque consilio ufo, deinde cum bono esse, quamvis causa temere instituta? præsertim cum ille ipsi, quorum ego causa timidiū me fortunæ commitbam, uxor, filia, Cicerones pueri, me illud sequi malent? hoc turpe, & me indignum putarent? nam Quintus quidem frater, quidquid mihi placet, id rectum se putare aebat, id animo & quillimo sequebatur. tuas nunc 20 epistolas à primo lego. hæc me paullum recreant. prius moneri & rogant, ne me propiciam, proximæ te gaudeat ostendunt, me remansisse. eas cum lego, mindus mihi torpis videor, sed tam diu, dum lego: deinde emergit turlum dolor. & αἰχλῶν Φαρνασίος, quatuorbum obficio te. mihi Tite, eripe mihi hunc dolorem, aut minue latrem, aut consolatione, aut consilio, aut quacumque se potes: quid tu autem possis? aut quid homo quisquam? 21 vix Deus jam.

2. Quid enim haec negotiū? succensui. 3. Vulg. quid enim negotiū? succensui.
2. Me non defendente.) Ab impensis abeit negotiū, quam ex conjectura repulit Vici. Ant. Augustin. & Mal. legant, hoc ne defertur, quam legionem valde probat Iun.

3. Si quis apud Homerum: Faērē legebat, fecit apud Homērum. Iun additio pronominis, si fecit ut, &c. Vt. vero sic totum locum legi placebet, res agitatur quidam, &c.

4. Etiam & dea dixisse.) Deoerat hic Homerē versus prouuntiatus à Thetide, quem Vici, restituit.

5. Auctio.) Statim enī tibi deinde post Hectorem morti parata.

6. Auctio.) Vtiam statim moriar, posteaquam non eram sōcio, cùm interficeretur, opem laturus.

7. Et ergo ut hæc officia mercenda vita puto. EX antiquiore suo exemplari hanc lectionem crux Victor. quam & Germani protulerant; sed verbum, & nomiñferunt. Hic autem Faērē. delecto conjunctio nōtā & vulgaverant ante Victorū vero hæc officia mercenda vita puto.

8. Et ex forsan mea consilia nascitur.) Vetterē libri, Bol. Lamb. lūn. & cōfītā, rectissimē secundum menteē lūn. Lamb. legi malit, ut & cōfītā, vel alia consilia nascuntur.

9. Mētē.) Hæc epist. vulgatis unicam cum superiorē constituit, h̄ quidem illi in media cōpingiter.

10. Tēstūtū,) Faērē. ex transīffītē, quod est in miss. libris faciebat,

transīffītē.

11. Ad Curium via Minucia.) Ita ex antiquis suis Bol. Vici. verò legit ad Curium Minucia, quam antea legeretur, ad Curium in Minucia. hinc sequuntur Turn. l. Advers. c. 21. & Lamb. Man. Faērē. & Mal. ex Hor. legant. Nomina, sed & hic & apud Horat. Minucia legendum esse ostendit. Ceterum pro Curium, Ceterum habet liber Bell.

12. Ego utar.) Vulg. orgo utar.

13. Arpinum,) Vulg. in Arpinum.

14. In Cefēn., & quidem) Vulg. in Cefēn. est quidem.

15. Quod ut Curium videt.) Sic restituī: Vici & probat Lamb. Ger. mani legunt Curium, prius habebatur, Cetrum, unde prius faciebat Cetrum.

16. Consulē das & trib. pleb.) Dus, ut videatur Man. fortasse sui gloriosa antecedens verbū, aut legendū, ut homo eruditus ex. flim. Cetrum & das tribū plebū.

17. Sciret res ipsa cogebat, cum consilio explicare nibil possem.] Alii gen. res, scilicet qui nisi consilio possem.

18. Αλαλόκητης.) Ita restituit Vici ex antiquore suo libro, & Homerē emendatis cod. antea legebatur, καλά ην).

* 19. Mene non primū.) Vulg. mēnu primū.

20. Epistolas & prime.) Ita est in omnibus Bolii codd. quidam legendū centent, & prima.

21. Vix Deus, &c.) Coā. Tern. habet, vix Deus. Jam rigidum.

3. Ut

iam, quidem illud molior, quod tu mones sperasque fieri posse; ut mihi Cæsar concedat, ut absim, cum aliis in senatu contra Cæzum agatur. sed timeo, ne non impetrerem, venit ab eo Furnius: (ut quidem scias, quos sequamur) Q. Titini filium cum Cæsare esse nuntiat: sed illum maiores mihi gratias agere, quam velle, quid autem me roget, (pacis ille quidem verbis, sed ceteris cognoscere ex illius epistola. me miserum, quod tu non valueris. una fuissimus: consilium certe non desuisset,

I am not yet experienced.

sed acta ne agamus: reliqua paremus. me adhuc hæc duo fellerent, initio spes compositionis, qua facta volebam uti populari vita, sollicitudine senectus nostram libetanti: deinde bellum crudele, & exitiosum, & suscipi à Pompejo intelligebam. MELIORIS medius fidelis civis, & vii putabam, quovis supplicio affici, quam illi crudelitati non solum praesse, verum etiam interesse. videtur vel mori fatus fuisse, quam esse cum iis. Ad hæc igitur cogita, mi Attice, vel potius excoquita. quemvis eventum fortius feram, quam hunc dolorem.

CÆSAR IMP. S. D. CICERONI

IMP.

VM Furnium nostrum tantum vidissim; neque loqui, negus erit, meo commode potuissim; properarem, atque essem in iure, prouisum jam legibus; præterire tamen non potui, quin & severum ad te, & illum mitterem, gratiaque agerem: 5 & si hoc & Ioseph, & sapienti mihi fatidus videor; ita de me mereris. in primo a te puto, quoniam confido me celebrer ad urbem venustum, ut te ibi videam; ut tuo consilio, gratia dignitate, ope omnium remunris possum. Ad propositum reveras: festinatione mea, brevitate litterarum ignoscet, reliqua ex Furnio cognoscet.

CICERO ATTICO. S.

CLIPSIBRAM ad te epistolam, quam darem IV. ID. Sledo die is, cui dare volueram, non est protæctus. venit autem ipso die 6 ille celeripes, quem Salvius dixit: mulit uberrimas tuas litteras, quæ 7 mihi quiddam quasi animula restillantur. recreatum enim me non quoero dicere, sed planè tuas effecisti. ego enim non jam id ago, mihi crede, ut prospexitus consequar: sic enim video, nec dubius his vivis, nec, hoc uno, nos umquam temp. habituros. ita neque de otio nostro spero jam, nec ullum acerbitas recuso. unum illud extimecebam, ne quid nepti facerem, vel dicam, jam effecisti, sic ergo habeo, salutares te mihi litteras misisse: neque solum has longiores, quibus nihil potest esse explicatus, nihil perfectius; sed etiam illas brevioreis, in quibus hoc mihi quadruplum fuit, consilium factumque nostrum à Sexto probari: pergratumque mihi tu fecisti, à quo dilixi me, & quid rectum sit, intelligi, scio. Longior vero tuæ epistola non me solum, sed meos omnes agritudine le-

vavit. itaque utas tuo consilio, & ero in Formiano: ne aut ad urbem à tuorū mea animadvertisatur; aut, si nec hic, nec illic eum video, devitatum se à me putet. Quod autem suades, ut ab eo petam, ut mihi concedat, ut idem tribuam Pompejo, quod ipsi tribuerit; id me jam pridem agere intelleges ex litteris Balbi & Oppi: quarum exempla tibi misi: nisi etiam Cæsaris ad eos sive messe scriptas; quo modo in tanta infania. sin mihi Cæsar hoc non concedat; & video tibi placere illud, me postmodum de pace suscipere; in quo non extimesco periculum. cum enim tot impendat, cur non honestissimo, & depeccati velim; sed vereor, ne Pompejo quid oneris imponam;

10 μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
intorquet. mirandum enim in modum Cænus nostre Sullæ regni similitudinem concupivit. 11 εἰδός οὐ λέγω.
12 nihil ille umquam minus obscuratuit. cum hoene i-
gitur, inquires, εἴ τις βενιζεῖ sequor, mihi crede, non
causam, ut in Milone, utin. sed hactenus. Causa igitur
non bona est? immo optima: sed agetur / memento / fa-
dulom. primum, consilium est, sustocare urbem, & Ita-
liam fame; deinde, agros vastare, urete, pecuniis locuplet-
atum non abstinere. sed, cùm eadem metus in hac par-
te; gilliue beneficium non sit, rectius putem quidvis do-
mi perpeti. sed ita meruisse illum de me puto, ut ἔχει-
σια crimen subire non audeam. quamquam à te ejus
quoque rei justa defensio est explicata. De triuopho ti-
bi allentior: quem quidem totum facile & libenter abje-
cero. egregie probo 13 fore, ut, dum agamus, 14 ὁ πλάγιος
ἀρρεφέται obrepat: si modò, inquis, satis ille erit firmus,
est firmior etiam quam putabamus, de isto licet bene
speres. promitto tibi, si valebit, regulam illum in Italia
nullam reliquerit. teneatur socio & contra mehercule
meum judicium, & contra omnium antiquorum auctorita-
tem: nec tam ut illa adjuvem, quam ut hac ne videam,
cupio discedere. noli enim putare tolerabilis horum in-
fianias, nec uniusmodi fore, eti quid te horum fugit? le-
gibus, iudicis, senatu sublatu, libidines, audaciss, sumi-
tus, egestates tot agentis hominum, nec privatas
posse res, nec rem publicam sustinere. 15 abeamus igitur
indiquilibet navigatione: eti id quidem, ut tibi videbi-
tur: sed certe abeamus. sciemos enim, id quod expectas,
quid Brundisi actuū sit. Bonis viris quod ait probari,
qua adhuc fecerimus, scrique ab iis 16 nos non profe-
ctos, valde gaudeo; si est nunc ullus gaudendi locus. De
Lentulo investigabo diligentius: id mandavi Philotimo,
homini fotti, ac nimium optimi. Extremum est, ut tibi
argumentum ad scribendum fortasse iam desit. nec enim
alia de te nunc ulla scribi potest; & de hac quid jam am-
plius inventiri potest? sed quoniam & ingenium suppedi-
tat, (dico mehercule, ut sentio) & amor, quo & meum

M m m 4 inge-

1. Quod te Nō experientia. Supponendum ex Homeril ad K.
2. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
3. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
4. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
5. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
6. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
7. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου

8. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
9. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου
10. οὐ μέτρον γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου

jicit, uti quiddam quæsi anima à te inspiciatur, vel quæsi anima e Lamb. sic
propus ad leti pueram antenam, uti quiddam quæsi anima inspiciatur.

3. Tibi plures iudicines. Iudicabis à vulg.

9. Depeccati. Vulg. depeccati.

10. Μάργαρος γεγένθε φαλιό δίπον πλάσου

11. Εἰδός οὐ λέγω. Ex antiquis exemplaribus sic rescripsit Vetus
prius vulgabatur. εἰδός οὐ λέγω.

12. Nobis ille aquanum minime. Vulg. nihil aquanum, illenitane.

13. Ferre ut dico agemus. Mal. iudicet Bol. reposuit Mal. & hunc se-
quens Lamb. ut dico agemus.

14. οὐ πλάγιος ἀρρεφέται. Navigatio tempestiva. Hæc emendari
debet. V. et antea legebatur. οὐ πλάγιος ἀρρεφέται.

15. Abiemus igitur inde. Verbum, n. d. a libro Belli abest, & ut opinatur Man. recte abest.

16. Nisi una profiliens. Ita Dec. conjecturam vero Man. adjuvar Torn.,
qui habet eam profiliens vulg. non profiliens.

1. Quartus

colligamusque nos. I. ~~ad~~ ^{ad} pugnus enim simul ut rus decurso, arque in decursu ~~q~~^q meas commentari non desino sed iunt quendam eorum perditaciles ad judicandum. De optimisibus, sit Jane ita, ut vis: sed nosti illud **Amori & cib Kociby**. Titini filius apud Cæsarem est. Quod autem quia vereri videris, ne mihi tua confusa di spicantis me vero nihil delectat aliud, nisi coniunctum & littera tua quare fac, ut ostendis, ne deterris ad me, quid quid tibi in mente venit, scribere. mihi nihil potest esse gratius. Venio ad alteram nunc epistolam: Rete non credis de numero militum. ipso dimidio plus scripsit Clo dia, saluum erant de corruptis navibus. Quod Consules laudes; ego quoque animum laudo, sed consilium reprehendo. 2. ~~dis~~ ^{dis} persu enim illorum, actio de pace sublata est; quam quidem ego meditabam. itaque postea Deincreti librum de concordia tibi remisi, & Philotimo dedi. nec vero dubito, quin ex istorum beatum impendat, cujus initium ducetur a same. & metuam doleo non interesse huic bello; in quo tanta vis sceleris futura est, ut, cum **PARENTES** non alere letarium sit, nostri principes antiquilliam & fastidissimam parentem, patriam, fame necandam patent, atque hoc non opiuione timeo, sed interfici terribilios: omnis hac classis Alexandria, & Colchis, Tyro, Sidone, & Atado, Cyprio, Pamphylia, Lycia, Attodo, Chio, Byzantio, Lesbo, Smyrna, Mileto, Coo, ad intercludendos connatus Italiz, & ad occupandas fiumentias provincias comparatur, & at quam venier iratus! & his quidem maximè, qui eam maximè salvam volebant, quasi relicta ab us quos reliquit: itaque mihi dubitanti, quid me facere par sit, permagnum pondus affecti benivolentia erga illum: qua dempia **PERIA** melius esset in patria, quam patiam servando evertere. De Septentrione plane ha eft, mecum, ne vexetur Epitus. sed quem tu locum Grecia non diecum iri putas? prædicta enim pa am, & militibus offendit, se largitione ipsa lumenorem, quam hunc forte illud me præcire admones, cum illum video, & anima indulgenter, & ut cum gravitate potius loquar. Plani sic facendum. Arpinum, cum cum convencio, cogito, ne forte, aur ablim, cum veniet, aut cursem hue illuc via detinima. Bibuluan, ut scribis, audio venisse, & redisse pridie Idus Philotimum, & ut sis epistola tertia, expedita, at ille Idus, a me profectus est, eo ad tuam illum epistolam, cui ego statim recriperam, redditur summa littera. De Domito, ut scribis, ita opinor esse, ut & in Collano sit, & consilium ejus ignoretur. iste omnium superbum & torpidissimus, qui Consularia comitia a Prætore ad haberi posse, & est illi quidem, qui semper in Rep. fuit, itaque nimis hoc illud est quod Cæsar scribit in ea epistola, cujus exemplum ad te misse velle uti **CONSILIO** meo: age, etio hoc commune: **GRATIA**: ineptum id quidem, sed, puto, hoc similius ad quidam Senatorum sententias **DIGNITATE**, tonante sententiaz Consularis. illud

extremum est, OPPROMNIVM HERVM. id ego suspicari ceptum ex tuis litteris, aut hoc ipsum esse, aut non multo lecū, nam permagni ejus interest, rem ad interregnū non venire, id assilitur, & si per Prætorem Consules creantur, nos autem in libris habemus, non modū Consules a Prætore, sed ne Prætores quidem creati jus esse, idque factum esse nunquam. Consules, tō non esse jus, quid majus imperium à minore rogari non sit jus: Prætores autem, cū illa rogentur, ut collegæ consilium sint, quorum est majus imperium, aberit non longe, quin hoc à me decerni velit, neque sit contentus Galba, Scævola, Cælio, Antonio.

9. TOTI MBI ZOBO INGENIA ZBLO.

sed quanta tempestat impendat, viros. Qui transierint Senatores, scribam ad te, cū certum habebo. De re frumentaria recte intelligis: & quā nullo modo administrari sine vestigatiō potest: nec sine causa & eos, qui circū illum iunt, omnes postulantes, & bellum nefarium times, Trebatum nostrum, eti, ut scribis, nihil bene sperat, tam videt sane velim: quem fac horreis, ut properet, opportune enim ad me ante adventum Cæsaria v. ne sit. De Lanuino, statim, ut audiui Phameam mortuum, optavi, si modo esset futura Republica, ut id aliquis emeret mecum: neque tamen de te, qui maxime meus, cogitavi. to scibam enim te quo anno, & quantum in solo, solere quare: neque solum Romz, sed etiam Delicium digamma videbam. verumtamen ego illud, quamquam est bellum minoris astimo, quam estimabatur Marcellino Consule, cū ego illos hortulos propter domum, Anii quam tum habebam, jucundiores mihi fore putabam, & minore impensa, quam si Tusculanum refecissem, volui &c. Q. egi per pazard illi daret. Antī cū haberet venale: nouit, sed nunc omnia ista jaceri puto propter nummotum cætitatem mihi quidem erit ap̄tissimum, vel nobis potius, si tu emeris, sed ejus dementias cave contemnas. valde est venustum: quamquam mihi ista omnia jam addicta vastatitudinē videntur. Respondi epistolis tribus: sed & exspecto alias, nam me adhuc tua littera sustentauit, & D. Liberalibus.

CICERO ATTICO, S.

N H I E habebam, quod scriberem, neque enim novi. o N quidquam audieram, & ad tuas omnes restripiebam pridie. sed, cum me agrestis, non solam somno privaret, veram ne vigilare quidem sine summo dolore patetetur, tecum ut quasi loquerer, in quo uno a quieteo, hoc rescio quid, nullo arguento proposito, scribere institui. Amens mihi fuisse videor à principio, & me una hæc res torquet, quod non, omnibus in rebus labentem, vel potius ruentem Pompejum tamquam unus manipularis fecerit sim. vidi hominem xiv. KAL. Febr. plenum formidinis, illo ipso die sensi, quid ageret, numquam mihi postea placuit; nec

MMm 5 umquam

1. **Zafis** *L*et *cain*, *final utrū*.) Declamo, hæc causas ago. Partim conjecturam ope Decuratio qui: hæc verba sic refut, *f*est/vo
num pñmū decurso, arque ad diversa, &c. Ita emendavix Boilius, id
qui lassus & torio Bellarianis, Cavalc. Torrius, & al. eorum libri,
propositum pñ hæc decurso. Ant Augubinus *ut in vobis*, mutabat
haec tanq; ecce one Lambinus & Turnebus d. cap. 21. lenteſerant
al. & probab; eum ei; pollici poterant vulg. fñl de inim. simillimus de
cuso.

2. **P**rof. *similiter*.) Vñsini mñ. *dispersione*: al. *disciffa*.

3. **Gibus**, *tyr.* 1. nñs ex conjectura cogit. *D*ilectus, *Tyros*, *Sidone*, &c.
Aphrodita.) *V*a g. *Aude*.

4. *Ad* *gymnem* *et* *gymn*.) *Hæc* *cor*: & *est* à *V*istorio, pro eo quod
multa tractat quantum in *gymn* reatur.

5. *V*is *au* *ep* *solitaria*.) *V*ictorius emendat, ex antiquis libris, ut ad *ca*
pp *lib* *ut* *ca* *pp*.

6. *Epi* *de* *gymnang*.) *B*ilicu gr. habent vulg.

8. *P*er *prætrum*.) *Vulg*, *per* *prætrum*; ut & *infia* à *prætrum*, *pro* à *præ*
scribere.

9. *Tot* *Mbi*.) *T*unc cellus mihi latu dea secat.

10. *S*cribam enim te quæ annis.) *P*roxime ad Turnebi conjecturam
hæc verba referunt Decuratio, & scribam enim te quæ annis ex quantum in
solo labore quarti, neque solum Romæ, sed etiam Delicium Digamma, & de
ram: *M*anutius, scribam enim te quæ annis ex q. 1. f. 9. neque solum Romæ,
sed etiam Delicium Digamma, & ex vulg. scribam enim te de quæ annis, &c.
pro *D*el. *tum* *D*igamma, conjicunt ex dum, *tum* *D*igamma.

11. *E*spresso aliis.) *V*e in codd. *M*ala *p*rinç. sic in *Sord*'s legatur,
sed ex parte aliis; in *C*rusellino aliis suis & ita, vox illa, *tum*, *vulg* &
repit, & aliis exulavit hactenus.

12. *D*. *L*iberalibus.) *I*ta repou & *V*ector us, antea destrat littera *D* &
est *Data*: *I*an us vero polli *l*iberalibus *sc* ibi. *Vale*, & sequentem epि
stoli *sc* ibi. *et* *ca*.

una futura, colluvie regnare. Multa disputas huic sententia convenientia, inde ad extremum. Quid si, inquit, Lapidus, & Volcatius discedunt? Plans ΑΠΟΤΩ. Quod evenit iugur, & quod egerit, id ε ΣΤΕΡΚΤΕΟΝ putabo. Si tum dubitas, nunc certe non dubitas, istis manentibus. Deinde in ipsa fuga v. Kal. Mart. INTEREA non dubito, quia in Formiano manus fuisti, commodissime enim τι μάθος ibi οργαδεός; A. D. Kalend. Mart. cùm ille quintum jam diem Brundisii esset, τύμ poterimus deliberare, non scilicet integrare, sed certe minus instans, quam stuna projectus es. Deinde v. Nonas Mart. ε τὸ τέλον τῆς θύσεω cùm breviter scriberes, tamen ponis hoc, CRAS scribam plura. & ad omnia, hoc tamen dicam, non panisse me consilii de tua mansione: & quamquam magna sollicitudine, tamen, quia minus mali puto esse, quam in illa positione, manes in sententia, & gaudeo te manesse. Cum vero jam angerer, & timerem, ne quid à me dedecoris esset ad missum; illi Nonas Mart. Tamen, se non esse una cum Pompeio, non sara moleste, posse si opus fuerit, non erit difficultas; & illi, quo tempore fieri, erit αὐτὸς προπόντιος, sed hoc ita dixi, quia ratio mea invenit, eadem cetera agit, sincere, temperata, prudentia, valde video, & consideratus utilitate nostra consiluero. VII. Idus Mart. scribis. Peduceo quoque nostro probari, quod qui erim, cuius auctoritas multum apud me valet. His ego tuis scriptis me consolor, ut nihil à me adhuc delictum puto, tu modo auctoritatem tuam defendeo; & adversus me, nihil opus est: sed concisus egeo aliis, ego, si nihil pauci, reliqua tuebor, ad ea tute hortare, & me omnino tua cogitatione adjuva. Hic nihil dum de reditu Cæsaris注定, Ego his litteris hoc tamen profeci; perlegi omnes tuas, & in eo acquievi.

CICERO ATTICO, S.

1. ENTVLVM nostrum scis Puteolis esse: quod cùm è II. vistore quadam esset auditum, qui se diceret eum in Apoll. cùm is paullum lectione aperiuisset, cognosse, & cùm vix verisimile, nisi tamē Puteolos pueros, qui pervergissent, & ad eum litteras, inventus esset vix in horris suis occultans, litterasque mihi remisit, mitificè gratias agens Cæsari: de suo autem consilio C. Cacio mandata ad me dedisse. eum ego hodie exspectabam, id est 6 xiii. Kal. April. Venit etiam ad me Matius & Quinquatibus, homo inexcusabile, ut mibi viuis esset; temperatus & prudens: & existimat quidem est semper auctor oti: quād ille hac non probare mihi quidem viuis esset! quād ille amīxi, ut tu appellas, timere! huic ego in multo sermo-

ne epistolam ad me Cæsaris ostendi, eam, cuius exemplum ad te antea misi; togavique, ut interpretaretur, quid esset, quod ille scriberet, consilio mox seu vallo, gratia, dignitate, operum omnium respondit, si non dubitare, quin & opem, & gratiam meam ille ad pacificationem quereret. utinam aliquod in hac miseria Reipub. molitus, opus efficeret & navare mihi licet. Marius quidem & illum in ea sententia esse confidebat, & se auctorem fore pollicebatur. Pridie autem apud me Crassipes fuerat, qui se pridie Nonas Mart. Brundisii prolectum, atque ibi Pompejum reliquisse dicebat: quod etiam, qui irx. Idus illinc profecti erant, nuntiabant: illa vero omnes, & in quibus etiam Crassipes, & qui prudentia potis attendere, sermones minacis, inimicos optimatum, municipiorum hostis, metas proscriptiones, meros Sullas: quæ Lucrecium loqui? quæ totam Græciam? quæ vero Theophanem? & tame omnis spes salutis in illis esset; & ego ex cubo animo, nec partem ullam capio quietis; & ut has pestiles effugiam, cum dissimilimis nostri esse cupio. quid enim tu illic Scipionem, & quid Faustum, quid Libonem prætermis surum sceleris putas? quorum CREDITORIS convenienter dicuntur. quid eos autem, cùm vicinent, in civis effecturos? 12. quam vero μηχανής Cnzi nostri esse? nuntiant Aegyptum, & Arabiam διδάγμα, 13. & Μεσοπολυγίας cegitate, Hispaniam abiecisse, monstra narrant; quæ falli esse possunt. sed certe & hac perdite sunt, & illa non salutaria. Tuas litteras jam didicero. 14. post fugam nostram numquam jam nocturnum earum intervalum fuit. Misi ad te exemplum litterarum mearum ad Cæsarem; quibus me aliquid profectum puto.

CICERO IMP. S. D. CÆSARI IMP.

V Telligi tuas litteras, quas a Farnio nostro accepam, quibus mecum agebas, ut ad utrem efferem, te velle uti consilio & dignitate mea, minus sum admiratus: de gratia. & de ope quid significares, necum ipse quarebam: spe tamen deducebas ad eam coactum, ut te pro tua admirabilis ac singulari sapientia de otio, de pace, de concordia ciuium agi velle arbitrari. & ad carnationem expiabam sati: apiam esse & naturam & personam meam quod sita est; & si qua de Pompeio nostro tuendo, & tibi, ac Reip. recenciando cura te attingit; magis idoneum, quam ego sum, ad eam causam prefello reperies neminem: qui & illi semper, & Senatus, cùm primum posui, pacis auctorius; nec, summis armis, belli ullam partem attigi; judicavique eo bello te violari, contra cuius honorem, populi Romani beneficio concessum, inimici, acque invidi nitierunt, sed ut eo tempore non modo 15 ipse fautor di-

gnitatis

1. Σπεκτρος.) AEqui bonique consulendum. Vulg. Σπεκτρος.

2. Υπὸ τῶν λύσεων.) Sub reposito febris. Sic repositus Victorius ex ins. suo eo quod vulgabatur επὶ διαλογοῖς θεοῦ.

3. Adversus me uti ipsa effera, sed ex aere reges alii.] Ita Bosius, quem pro omnia sequitur Iannus, emendat hanc corruptam Decuratio latitudinem, adversus me nihil sapere est, censit ergo alii. vulg. adversus me nihil ipsa effera reges alii. Lambinus vero legit: Tu modo auctoritatem desiderans diridere adversarii: & adversus adversum ipsa est si mibi nullus inde responsum faciat, ut piceas.

4. Latitudine.] In vulgata editione hæc epistola unicam constituit enim latitudinem.

5. Epix verisimile.] Vulg. επὶ verisimile.

6. IIII. Kal. Ita Bosius ex Decuratio: vulg. IIIU.

7. Qua equarib; Hoc glossema esse putat Manutius, sed Bosius oportet probum esse.

8. Latitudinem est quidem semper auctor eti: Pro, autem eti: ms. Victorius, autem.

9. In quibus etiam Crassipes.) Bosianonis liber, in quibus Crassipes pro Crassiper, in Toscæ. & Cr. ell. Crassipe.

10. Qui prædicta pietate attendere.] Veteres libri, priores, scripti Bosius pro vulg. priori.

11. Quid Faustus.] Est hæc emendatio Victorius, prius ediderant, quid Faustus.

12. Quam vero μηχανής Cn.) Ex restituic Victoriae ante pro ea legebatur, nec; vulg. quam vnde prius μηχανής.

Magnulus, testis Manutius, μηχανής, malebat, parom apte, est enim μηχανής, longioris propriæ, ut μάχας seu μηχανής, longior. Interpretatur autem Dausqueus Pompeji patientiam moniti aliqui aere, quod & Cicero metuit. Sic μηχανής non est negare sibi homos, sed longa, qui, & profla veteribus dicitur. Neque enim Pufilium Pompeji in munus notarum Tullius, sed patientem eis quibus moderi non potest, nisi in Aegyptio aut Arabia: vides firmes aegaeaque. Patientem inquam; quali modi verit interpres Actor. Apollib. cap. xxvi. illud S. Pauli; μηχανής ἀντρού με: pat: enter meadus. Sed & magnum aurum has interpretari Latinus loquenti; idque ex variis harum Epitolarum locis, præfectorum ex libro X. ep. 7. Nihil ferre haec si sita Pompejam abjectum patet; c. in ore omnia, confitum Themistocleum, &c. en. Cn. nostri μηχανής, hactenus Dausqueus.

12. Et μεσοπολυγίας.) Post, Arabiam διδάγμα ms. Bosii subjiciunt, & μεσοπολυγίας, quomodo ille edendum curavit.

13. Post fugam nostram, nunquam iam nostrum earum intervalum fuit.] Hinc Ant. Augustinus conjectebat, nunquam iam melius earum intervallum fuit. Vrtilio placet magis si ita legeretur, & nunquam iam nostrum earum intervalum fuit.

14. Ipse Janus dignitatu.] Alii libri auctor. Bosii veteres fautor; quod probaret Manutius in suis extaret. Vrtilio autem placet adiutor dignitatis, ut est in suo ms.

3. dñe

gnitatis tua fui, verum etiam ceteris auctor ad te adjutandum; si
me nunc Pompeji dignitas veloremque moveret, aliqui enim sunt am-
ni, cum vos duo delegi, qui praecipue colere, & quibus eissem scis precibus ore
et obsecris, ut in tuis maximis curia aliquid imperias temporis huic
quaque cogitaretur, ut tuo beneficio bonus vir, gratus, pius denig, effi-
ci in maximi beneficii memoria possum; quas tantum ad me ipsius
pertinerant, sperarem me a tamen imperaturum. sed, ut arbitraber-
et, ad tuam fidem, & ad Rempub. partem, te i'ca p'c'p' & urru
que vestrum, & ad i' viuum concordiam, pars, quam accommoda-
r' sicutum, conservari. Ego, cum ante tibi de Lenulo gratias egis-
sem, cum ei salutis, qui mihi fueras, fuisses: tamen, lectio ejus littera-
rum, quas ad me gratissimo animo de tua liberalitate, beneficioque mis-
ser, eandem me salutem a te accipere putavi, quare illo: in quem
si me intellige esse grauam; cura, obsecro, ut etiam in Pompejana effi-
ci possum.

CICERO ATTICO, S.

LEGERAM tuas litteras xiii. Kalend. cum mihi epistola affectur à Lepta, circumvallatum esse Pompejum, raibus etiam exitus portus teneri, non medius fidius præ lacrimis possum tel-qua nec cogitare nec scribere. misi ad te exemplum, miseris nos, cur non omnes fatum illius unam executi sumus? et ecce autem a Matio & Trebario eadem: quibus Minturnis obvii Caesaris tabellarii, torqueor infelix ut jam illum Mucianum exxitum exoptem, at quam honesta, at quam expedita tua consilia, quam evigilata quis cogitationibus, qua itineris, qua navigationis, qua congreffus, sermonisque cum Cæsare? omnia cum honesta, cum cauta. in Epirum vero invitatio quam suavis, quam liberalis, quam fraternalis? De Dionyho, sum admiratus: qui apud me honorior fuit, quam apud Scipionem Panazius, à quo impetrissime hac nostra fortuna 3 despecta est: odio hominem, & otero: utinam ulcisci possem: sed illum ulcerantur mores sui. Tu, quixso, nunc vel maximè, quid agendum nobis sit, cogita. Populi Romani exercitus Cn. Pompejum circumcidet; fossa & vallo septum tenet, fuga prohibet; nos vivimus, & stat urbs ista? Prætors juri dicuntur. Adiles ludos parant? viri boni uturas perficitur? ego ipse sedeo? coner illuc ire, ut insanus? implorate fidem municipiorum? boni non sequentur; leve irridebant; regum novarum cupidi, victores præstent? & armati, via manus afferent. Quid censes igitur? 4 equidnam est tu consiliis ad finis hujus miserrima vita? nunc doleo, nunc torqueor, 5 cum quibusdam aut sagiens videor, quod una non ierim, aut felix fuisse, mihi comita, numquam enim illius victoria socius esse volui; calamitatis mallem fuisse quid ego nunc tuas litteras, quid tuam prudentiam, aut benivolentiam implore? a tunc est, nulla re jam possunt suvari qui ne quid optem quidem jam habeo, nisi ut aliquam inimici misericordia liberemur, & Cœris invicere. **A**lexander

ut opinor, ille de ratibus. quid enim est, quod Dolabella
his litteris, quas 111. Idus Mart. à Brunditio dedit, hanc
3. evnue*cias* quasi Cæsar scriberet, Pompejum in fuga
esse? cumque primo vento navigaturum? quod valde dis-
crepat ab iis epistolis , quarum exempla antea ad te misi,
hic quidem meta fecera loquuntur: sed non cert nec re-
centior auctor, nec hujus quidem melior Dolabella.

CICERO ATTICO, S.

TUAS xxi. Kalend. accepi litteras, quibus omnia con-
filia diffit in id tempus, cum scelitus, quid actuū
fit: & certe ita est: & nec interim potest quidquam statui,
sed ne cogitari quidem. quamquam haec mihi littera Dol-
abella jubent ad pristinas cogitationes reverti. fuit enim pri-
die Quinquastrus egregia tempestas, qua ego illum uium
puto. **S**euq[ue]jus confiliorum tuorum non est à me colle-
cta ad querelam, sed magis ad consolationem meam: nec
enim me tam hac mala angebat, quam suspicio culpa, &
temeritatem meā: eam nullam puto esse: quoniam cum
confiliis tuis mea facta & consilia consentiunt. Quid mea
prædicatione factum esse scribis magis, quam illius merito,
ut tantum ei debere viderez: est ita. & ego illa extuli
semper, & eo quidem magis, ne quid ille superiorum mem-
nisse me putaret: quia si maximē meminisset; tamen il-
lius temporis similitudinem jam sequi deberem, nihil me
adjuvit, cum posset: & postea fuit amicus, & etiam valde:
equum ob causam planè nescio, ergo ego quoque illi,
qui etiam illud par in utroque nostrum, iū quod ab eis
dem electi sumus, sed utinam tanquam ego ei prodele po-
tuisse, quantum mihi ille potuit, mihi tamen, quod fe-
cit, gratissimum: nunc cum juvare qua re possim, feci:
nec, si possem, cùm tam pestiferum bellum pararet, adju-
vandum putarem, tantum offendere animum ejus hic ma-
nens nolo, nec mehercule ista videris, quia tu potes jam
animo providere, nec intereste istis malis possem, sed eo
tardior ad discedendum sui, quod difficile est de discensu
voluntatio sine illa spe redditus cogitare: nam ego hinc ita
paratum video peditatu, equitatu, classibus, auxiliis Gal-
lorum, quos Matius 12. lā>π̄σ̄, ut puto; sed certe dice-
bat, 13 pedium cccccc, equitum sex polliceri sumptu
suo annos decem. 14 sed si hoc λ>π̄σ̄, magnas ha-
bet certe copias: & habebit, 15 non ut ille, vestigia, sed ci-
vium dona, adde confidentiam hominis; adde imbecillitas
bonorum virorum; qui quidem, quod illum sibi merito itatum putant, oderunt, 16 ut tu scribis, ludum, ac
vellem, i scribis, quinam hic significasse te. sed certe ita, quia
plus ostenderat, quam fecit; & vulgo illum, qui amant, non
amant, municipia vero, & rusticī Romani illum ac-
tuunt, hunc adhuc diligunt, quare ita paratus est, ut, etiam
si vincere non posset, quo modo tamen ipse vinci posset,

& tam valde, & quam ab causam, plene seit.

11. *Quod ab eis illius sumus.* Ita se conjectura reposuisse ~~ad annos~~
Lambinus, sed ita Cavalcantis librum habere testantur Manutius &
Victorius, Memm. codd. Bessarionis, Maffei, & aliorum habent dile-
cti, ene Manutius concinit legendum ~~est~~.

12. Ελαπτέριον.) Falco ostentabat, insolentius jactabat. Ita Manutius, Malaspinus, Lambinus, Bosius reposuerunt. Victoriae επιληπτέριον του σταθμού legit, quod postremum vulgo rece-

13. Pedimentum CCID. -) Decurat hic numerus perditum & equitum
cum ex Decurto sic Bosis expressit.

14. Sed & hinc **Xanthus** pgo.) Fulsa quædam ostentatio. Hoc ex am-
tiquo suo repositum Victor. & rejecit **Ψευδης** illud **Ψευδονοσιδερος**,
et ibi rescas habebatur.

15. Nonne illud legible? Restituit particulam, ut, ante vocem, ille, ex Decurto Boles.

16. Ut in scribus ludamus ac vellem, scribus qui quoniam hoc significasse te, sed
dolis suis pueris ostenderemus quae fecit; & dulcissimum illud. Et tunc fortius ex-
ponam, sed vestris si legit. & ut in scribus ludamus ac vellem, scribus qui quoniam
hoc significasse te, sed pro quam quia plus ostenderemus quae fecit, amissio-
nem facias, donec venires ad nos habere, quoniam te hunc ostendit, sed etiam.

L. II.

non videam. ego autem non tam ²⁹γετέας hujus timeo, quam a πεισθεῖσιν, οἵ τις μάρτυρες διδοῦσι, inquit Πλάτων, οὐδέ ἐπι μαρτυρόμενος ἀράγεται. 3 Illa ἀληφα video tibi non probati: quia ne mihi quidem placebant, sed habebam in illis & occultationem, & ἵστασις fidelem: quia si mihi Brundisi superpetunt, malem. sed ibi occultatio nulla est. verum, ut scribis, & cum scierimus. Viris bonis me non nimis excuso, quas enim eos cenas & facete, & obire & scripti ad me Sextus? quād lautas? quād tempestivas? sed sīt quāmvis boni, & non sunt meliores, quād nos: moverent me, si essent fortiores. De Lanuino Phamez, erravi: Trojanum & somniabam id ego volui. Q. sed pluris est. istuc tamen capere emeres, si ullam spem fruendi viderem. Nos qua monstra quotidie intelligamus, ex illo libello, qui in epistolam conjectus est. Lentulus noster Putealis est ἀδημάτων, & ut Cæcius narrat, quid agat: 10 Διεγένετο Corinthiensem reformatam: Pompejus non putat iatis factum: beneficio Cæciliis moveretur, sed tamen moveret magis prospeta re. 11 Tene haec ferre posse? Omnia misera: sed hoc nihil miserius: Pompejus 12 N. Magnum de pace misit, & tamen oppugnatur, quod ego non credebam: sed habeo a Balbo litteras, quarum ad te exemplum misi: lege quo, & illud infimum caput ipsius Balbi, optimi, cui Cnæus noster 13 locum, ubi horos adficaret, dedit: quem cui nostrum nos sapere præstulisti itaque miser torquetur, sed ne bis eadem legas, ad ipsam te epistolam rejicio. Spem autem pacis habeo nullam. Dolabella suis litteris, Idibus Mart. datis, merum bellum loquitur. maneamus ergo in illa eadem sententia misera & desperata: quando hoc miserius esse nihil potest.

BALBUS CICERONI IMP. S.

CÆSAR nob̄ litteras per breves misit, quarum exemplum sub sensu brevitatis epistola sic poteris sum valde effi distensum, qui tota de tamen breviter scripsit, si quid praeterea novi fuerit, fuisse nisi scribam.

CÆSAR OPPICIO CORNELIO S.

A. D. VII. Id. Mart. Brundisiens veni: ad merum castra posui. Pompejus et Brundisi, misit ad me N. Magnum de pace, que sua sunt: respondi hoc vos statim scire volui. cum in spem venis, 14 de compositione aliquā me confidere, statim vos certiores faciam. Quoniam me non putas, mi Cicerio, torqueri, postquam

rursum in spem pacis veni, ne qua resonem compositionem impediatur? namque, quod absens facere possum, opto, quod si una esset, aliquid fortasse in proficie possem videri, nunc expectatione crux.

CICERO ATTICO, S.

MISERAM ad te 16 IX. Kalend. exemplum epistola¹⁴ Balbi ad me, & Cæsar ad eum: ecce tibi, eodem die Capua litteras acceperit ab Q. Pedio, Cæarem ad le pridię Idus Mart. 17 misisse hoc exemplo, Pompejus si oppide tenet, nec ad portas castra habemus, sonamus opus magnum. Et multorum dierum, propter alitudinem mari, sed tamen nihil est quod portu faciamus, ab utroque portu cornu molejacionis, ut aut illum quā primaria roriscere quod habet Brundisi copiarum cogamus, aut exitu prohibeamus.

Ubi est illa pax, de qua Balbi scriperat torqueri se? ecquid accipius? ecquid crudelius? atque 18 eum loqui ad Hernicā narrabat; Cn. Carbonis, M. Brutus se poenias persequi, omniumque eorum, in quos Sulla Crudelis hoc socio fuisset: 19 nihil Curionem se duce facere, quod non hic Sulla duce: fecisse ad ambitionem, quibus exilio poena superioribus legibus non fuisset; ab illo patiū proditoris de exilio reductos esse: queri de Milone per vim expulsi neminem tamen se violaturum, 20 nisi qui armahac, contra Baebius quidem à Curione 21. Id. prefectus, homo non infans, 21 sed qui Sulli non dicat, plane nefcio, quid agam, 22 illinc equidem Cæsari prefectum puto. quidquid est, biduo sciens, 23 A te nihil, ne Anteros quidem, qui à te litterarum: nec mirum, quid enim est quod scribamus? ego tamen nullum diem prætermitto. Scripta epistola, littera mihi ante lucem à Lepta Capua redditæ sunt 1dib. Mart. Pompejum à Brundisi consendisse, 24 at Cæarem A. D. vii. Kalend. Apr. Capuz fore.

CICERO ATTICO, S.

CUM dedillem ad te litteras, ut scires Cæarem Capuz¹⁵ vii. Kalend. fore, 25 allata mihi sunt littera cum in Albano apud Curionem v. Kalend. fore cum videtur, Atpinum pergam. si mihi veniam, quam peto, dederit, utar illius conditione; si minus, impetrabo aliquid à me ipso, ille, ut ad me scripti, legiones singulas posuit Brundisi, Tarenti, Siponti, claudere mihi videtur maritimos exitus; & tamen ipse Gratiā spectare potius, quād Hispanias, sed hæc longius absunt. Me nunc & congregus

hujus

1. Γετέας.) Præstigias; malicioſas blanditiæ.

2. Πεισθεῖσιν.) Soſitionem violentam, tyranneum enim petunt, inquit Plato, permixta sunt, ut scis, nec essentariis.

3. Illa ἀληφα.) Loca portu carentia, loca importuosa. Ita Vicanum, & orationem pungendam esse docet.

4. Sed habebam in illa & occultationem. Et hunc locum, sanavit Victoria, antea habebatur, & ecclesiæ fœsum. Junius ex miss. Palat. leg. habebam in illa sum & occultationem.

5. Compositum.) In libro impresto Manutius erat *compositum*; unde illi malobat, cum sequitur.

6. Letipidem seruare.) Faētus, pro *seruare* reponet, *seruare*.

7. Non sans wellere.) Legendum fortissime est, ut videntur Lambinus, fini multo: quem aut.

8. Jamnadem.) Vulg. *seruare*, *seruare*.

9. Vi *curiae uraria*.) Vulg. *seruare*, *seruare* narrat.

10. Διεγένετο.) Infamiam.

11. Non haec esse posse.) Aeneas à vulg. vocula, & quam Bosius ex Decentio refutavit: quo hæc verba sic corrupte concipiuntur, & non haec posse.

12. N. Magnum.) Et his & infra impresti habent, Ca. Magism.

13. Iuvabili herculea accessit.) Ite reposuit Bosius, pro corrupcio illis, ita non debet ut herculea ad haec. Iuvabili ex duobus Palat. locum habebam, libet ut ad haec.

14. De compunctione aliq. & necessitate, Vetus suscipitor verbas aliq. & non conferens, offensio sit.

15. Proscripto pessim vides.) Verbum, vides, deest in vulg.

16. Id. Kal. i. B. Est omnis liber te & Manutio: vulg. III. Kal.

17. Magis haec exceptio.) Vulg. missit & resumis biseccopis.

18. Eius qui ad festinatus uerabat.) Vulg. loqui quidam ad festinatus.

19. Nihil Curionem se ducere facere; quod non hic Sulla ducet & fecisse ad amabilitatem, quod non exilia papa supereribbus legi huius non fuisset. Curionem, pro Cæsare poluit Victorius. Bosius vero præter distinctionem mutavit, feciisse: in seruare. Junius nihil in texto, distinctionem solam mouet hoc modo, quod non hic Sulla ducet, feciisse ad ambitionem: vulgo enim sic distinguunt, quod non hic Sulla ducet feciisse. Ad hanc r. Manutius conjeturit, ab huius legi, *Arbitria uera*; quibus exilia papa supereribbus legibus non fuisset, & tamen ab illa pars prædictoris exillis rediles esse: & hujus conjecturam Lambinus in editionem suam retulit. Ceterum pro predictis, Fænus legibus perdidit.

20. N. si qui arma hæc contraria.) Ira Bosius ex Scidis: Vulgo nisi qui armabat curva, quod Victorius jam ex parte emendavet, & rejiciens duas illas voces, se movent, que posse, contraria regebantur; Innatus vero si d. illigat nisi qui armat. *Hæc* *Arbitria* *Bosius*.

21. sed qui S. illi.) Separat hic Bosius notem S. à vocabulo: qui, quod imponit adhaerat. Manutius commodum exsiliabat fænum, esse hi si distinguerebantur, sed quod, uti sen dicit, *Vetus liber* *Vulni* habebat, sed quod p. ille non dicit. Torelli sed quod illi non dicit: unde Lambinus olim putaverat emendandum, sed quod illa non dicit. Turnebus lib. i. c. 2. conjicit, sed quod sibi non dicit: qui: dicitur.

22. Idinctus dem.) Hic receptum lectionem servat. Victorius ait tamen suum autem quidam habebat, idem quidam: quod omnino probat Giffenius, in indice *Loci etiam*. Vulg. illud quidam.

23. A te illi latus Autors quidam re seruare. Concluere hoc est Bosius, adjuncta corripiat hic Decentio scripturna, & se uult, ne ante p. quidam qui a te Junius hic Bosium loquitur, sed aliquid in distinc. Cionibus. Ceterum Manutius qui hinc novam, epistolam ordinavit, legi r. a. t. m. n. ut. ante: proscripto quidam quid litterarum. *Vulgo* ita vulgus ex Manutio, nisi quod nulla distinctio possit vocem nihil Lambia. & cunctis proferens, ut ante dies quidam quinque.

24. At Cæarem.) Vulg. ac Cæarem.

25. Allata mihi sunt littera.) Vulg. allata mihi sunt Capua littera:

1.291

hujus stimulat; (si verò adest) & primas ejus actionis horre volet enim eredo, s. c. facere: volet Augurum decreum: rapiemur, aut abentes vexabimur: vel ut Consules roget Fratres, vel Dictatorem dicat: quorum neutrum jus est, & sed si Sulla potuit efficere, ab interrete, ut Dictator diceretur, & Magister equitum, cur hic non possit? nihil expedio, nisi ut aut ab hoc, tamquam Q. Mucius, aut ab illo, tamquam L. Scipio. Cum tu hac leges, ego illum fortasse convenero & ritra, noster, ne illud quidem nostrum proprium, erat enim spes proinqui reditus; erat hominum querela. nunc exite cupimus; qua spe reditus, mihi quidem numquam in mente venit, non modo autem nulla querela est municipalium hominum, ac rusticom, sed contra metuant, ut crudelem, iratum, nec tamen mihi quidquam est miserius, quam remansisse; nec optatus, quam evolare, non tam ad belli, quam ad fugae scitatem, sed tu omnia confilia differebas in id tempus, cum sciremus, quæ Brundisii acta essent. scimus nempe: hæremus nihil minus. vix enim spero mihi hunc ueniam daturum: eti multa afferro justa, ad impetrandum, sed tibi omnem illius, meumque sermonem, omnibus verbis expressum, statim mittam. Tu nunc omni amore enitere, & ut nos cura tua, & prudentia juves, ita subito accurrit, ut ne & T. Rebilum quidem, ut constitueram, possim videre, omnia nobis imperata agenda, sed tamen,

— 7. Adua p̄p̄ aūt̄, ut ait ille,

Adua 7. q̄d̄ d̄c̄p̄w̄ r̄c̄p̄n̄t̄.

quidquid egero, continuo scies Mandata Cæsaris ad Consules & ad Pompejum, que rogas, nulla habebo: & quæ Egyptia atulit, illa evia & misi ad te ante: è quibus mandata puto intelligi posse. Philippus Neapoli est, Lentulus Puteolis. De Domitio, ut facis, sciscitare, ubi sit, quid cogitet. Quod scribis, asperius me, quam mei pariantur mores, de Dionysio scripisti: 10 vide, quam sim antiquorum hominum, te medius fidius hanc rem gravius putavi latrum esse, quam me. nam præterquam quod te moveri arbitror oportere injuria, quæ mihi à quoquam facta sit; præterea, si ipsum quodam modo hic violavit, cum in me tam improbus fuit? sed tu id quanti alimes, tuum judicium est, ne etiam in hoc tibi quidquam oneris impono. ego autem illum male sanum semper putavi, nunc etiam impurum & sceleratum puto: nec tamen mihi inimicorum, quam libi. 11 Philargyro bene curasti, causam certe habuisti & veram & bonam; relictum esse me potius, quam reliquise. Cuius dedissem jam litteras A. D. II. Kalend. quos 12 cum Matio pueri, & Trebatius miseram, epistolam mihi attulerunt hoc exemplo;

MATIUS ET TREBATIUS CICERONI IMP. S.

CVM Capua exsuffsum, in itineri audimus Pompejum Brundisii, profectum esse: Cæarem postero die in oppidum intrasse; concursum esse; inde Romanum contendisse; velle ante Kalend. esse ad urbem, & paucos dies ibi commorari, deinde in Hispanias precepsisse. N. b. non alienum visum est, quoniam de adventu Cæsari pro certo habebamus, 14 pueros ad teramistre, ut id in quātemporū fures. Mandata tua nobis cura sunt, eoz, ut tempus p̄fularit, agemus. Trebatius Scavola facit ut antecedat. Epistola conscripta, manutinutum est nobis, 15 Cæarem A. D. VII. Kalend. April. Beneventi mansurum, A. D. VII. Capua, A. D. VI. Sinuessa. 16 hoc pre certo putamus.

CICERO ATTICO, S.

CUM, quod scriberem ad te, nihil haberem: tamen, ne 16 quem diem intermitterem, has dedi litteras. A. D. VI. KAL. Cæarem Sinuessa mansurum nuntiabant. ab eo militari reddita sunt A. D. VII. KAL. quibus jam opes meas, non, ut superioribus litteris, opem, exspectat, cum ejus elementum Corinthis illam per litteras collaudem, rescripsit hoc exemplo.

CÆSAR IMP. CICERO NI IMP. S. D.

ECTE augurari de me, (bene enim tibi cognitus sum) nihil abesse longius crudelitatem. atque ego cum ex ipsa re magnam capio voluptatem: sum, meum factum probari ab te, 17 triumpho gaudio: neque illud me moves, quod ita, quæ à me dimisisti sunt, dicebisse dicuntur; ut nō rursus bellum inferrent: nihil enim malo, quam ex me mei similem esse, & illos faci. Tu veliro mihi ad urbem precessisti, ut tuu confidisti, argu opibus, ut confidisti, in omnibus rebus utar. Dolabella tu nihil feci mihi esse jucundissimum. hanc ades habeo gratiam illi: neque enim alter facere poterit: tanta & que humana, ut sensu, ea in me est beni voluntas.

CICERO ATTICO, S.

TREBATICUM VI. KAL, quo die has litteras dedi, exspectabam, ex ejus nuntio, Matique litteris meditabor, 17 quo modo cum illo loquar ó tempus miserum/nec dubito, quoniam à me contendat, ad urbem veniam. Senatum enim Kalend. velle le frequentem adesse, etiam Formis proscripti iussit. ergo ei negandum est? 18 sed quid præcipi? statim ad te perscribam omnia, exilius sermone statuam. Apinumne tuuhi cundum sit, an quod alio. Volo Ciceroni meo togam puram dare. istuc puto, tu, quo se, cogita quid deinde. nam me habebet molestia reddiderunt. A Curio velim scire, ecquid ad te scriptum sit de Tirone. ad me enim ipse Tiro ita scripsit, ut vereat, quid agat. 19 qui autem veniam inde nūdūdū nuntiant. sane in magnis curis etiam hæc me 20 sollicitat. in hac enim fortuna perutilis ejus & opera & fidelitas esset.

CICERO

1. Et primas ejus actiones.) Victorius emendavit, prima, quod vulgo receptum est.

2. Sed & Sulla. Est à Tornæ & Cruseill, vulgo, & si Sulla.

3. Ut dilatim dixerint & magister equum.) Lambinus affinitatibus Malaspina, exilimantur hoc totum, & magister equum, esse delendum, quoniam à nonnullis miss. absit.

4. Tertia, & noster. Supplendum ex Homero: ἡλίου. perfex, gravius tulisti. Hoc restituit Victorius, qui tamen existimat debere scribi, τετράδιο.

5. Veneris cura tua.) Vulg. tuis curatua.

6. T. Rebilum, Tornæ & Cruseill, & Malaspina, codd. Trebillum; è quibus T. Rebilum, fecit Bosius, olim formis excutum habebant Trebillum, quam veterem lectiounem esse asserte Victorius; nonnulli potea in Tribatianum convertorunt; Turnebus in T. Rebilum, d. cap. 2.

7. Adua p̄p̄.) Alia quidem ipse, alia autem vel Deus sugg. geret.

8. Quæ, & Egyptia attingit.) Ternebo ita legenti affinitatibus. Veneris aut in veteribus libris esse; que descripta assulit, quod etiam vulgati omnes habent.

9. Mis ad te ante.) E. Tornæ & Cruseill, vocem ante reposuit Bosius.

10. Vide quem amanturam hominum.) Cattigavitita Victorius. Antra, vide quam sit, legebatur.

11. Philargyre bene curasti.) Verbum curasti, addidit ex Tornæ & Cruseill.

12. Cum statim patet.) Vulg. puer.

13. Quae habet.) Vulg. quae habebet.

14. Puer ad te.) Vulg. puerus tuus ad te.

15. Cæarem A. D. II. Kal. April. Beneventi mansurum a. d. VII. Capua a. d. VI. Sinuessa.) Vulg. sic legitur, Cæarem ad II. Kal. Capua ad VII. Sinuessa.

16. Hoc precessi.) Vulg. has pro certo.

17. Triumphi gaudie.) Ita Lambinus, ex Tornæ, & Bosius ex Cruseill.

Victoriana canticum, triumpho & gaudie.

18. Sed quid præcipi? statim.) Decurati hæc lectio est, quomodo concererat legendum Turnebus libro i. cap. 21. Victorius scribit, quid præcipi? statim, &c. idque vulgo receptum est. Faernus & Lambinus repouunt, præcipio; ali præcipi. Vetus ac mis. unum habere præcipiat. Ante Victorium ubi legebat, sed quid præcipiat statim? quælectio proxime accedit ad illam, quam lunios se in duobus Palat. repuisse ait, sed quid præcipiat, statim? & statim.

19. Qui autem veniam inde nūdūdū nuntiant.) Conjectura hæc est Bosius, adjuva corrupta haec lectio Decurati, in denuo. Befariois liber habet, in id modo nuntiant; ita & Tornæ testo Bosio, nisi quod servat, nuntiant. Cruseillius, in denuo. Lambinus qui sit Tornæianus habet, qui autem veniunt, iunius admodum nuntiant. Iunius ait se proxime veterem scripturam reponere, qui autem veniunt, iunius mide nuntiant.

20. Sollicitas.) Vulg. sollicitas.

CICERO ATTICO, S.

VTRVMQ; ex tuo consilio. nam & oratio fuit ea nostra, ut bene potius ille de nobis existimat, quam gratias ageret: & in eo mansimus, ne ad urbem. illa fecellentur, facilem quod putaramus. nihil vidi minus damnari se nostro iudicio, i tardiores fore reliquos, si in his non veniremus, dicere. ego, dissimilem illorum esse causam, & cum multa; veni igitur. & age de pace, meone, inquam, arbitratu? an tibi, inquit, ego prescribam? sic, inquam, agam, Senatui non placere in Hispanias iti, nec exercitus in Greciam transportari; multaque, inquam, de Cnzo deplorabo. tum ille, ego vero ista dici nolo. it: putabam, inquam: sed ego & eo nolo adesse, quod aut sic mihi & diecum q; aut non veniendum, multaque que null modo possem silere, si adesset, summa fuit, ut ille quasi exitum querens, ut deliberaret. 5 non fuit negandum, ita discessimus. credo igitur hunc me non amare. at ego & me amavi; quod mihi jam pridem usu non venit rehqua, & dixi, qui comitatus? quæ, 7 ut tu soles dicere, rehqua! in qua era? Eros sceleris. & rem perditam? o copias desperatas! 9 quid, quod Servii filius? quod Titini? quo in his castis fuerunt, quibus Pompejus circumcidetur? sex legiones, 10 multas, vigilat, audet: nullum video finem mali. nunc certe promenda tibi sunt consilia. Hoc fuerat extremum. illa tamen 11 καρδεῖς illius est odiosa, quam pene pretensi; si sibi consiliis nostris uti non licet, usurpar, quoniam posset ad omniaque esse descensum. vidisti igitur virum, ut scriperas? ingenuisti? certe cedo reliqua. quid? continuo ipse 12 in Pedanum, ego Arpinum, inde capitulo quidem 13 λαλαγύσσων illam tuam. 14 tu (magis) inquietus actum ne agas. etiam illum ipsum, quem sequimus, muta fecellerunt. sed ego tuas literas expecto. nihil est enim iam, ut antea, VIDRAMVS MOT QVOR SVM EVADAT. extremum fuit de congressu nostro: quo quidem non dubito quin illum offendem. eo matruis agendum est. amabo te epistolam, & πολιτικόν, valde tuas literas nunc exspecto.

CICERO ATTICO, S.

Go meo Ciceroni, quoniam Roma caremus, Arpini 15 post simum tegam puram dedi: idque municipibus nouti fuit gratum, eti omnes, & illos, & quæ iter feci,

moestos afflictosque vidi: tam tristis, & tam atrox est ἀνθρώπος hujus ingentis mali. 15 delectus habenunt; in hiberna deducuntur. EA, QYAS, etiam cum à bonis viris, cum justo in bello, cum modestè fiant; tamen ipsa per le molestia sumi, quæ censes acib; nunc esse, cum à perditis, in civili nefario bello, petulantissimè fiant? cave autem potes quemquam hominem in Italia turpem esse, qui hinc abit, vidi ipse Formis universos: neque mehervile umquam homines putavi; & notam omnes; sed numquam uno loco videram. Pergamus igitur, quod placet, & nostra omnia relinquamus. proficiscamur ad eum, cui gravior noster adventus erit, quam si unā suffissemus, tum enim eramus in maxima spe; nunc, ego quidem, in nulla: nec, pater me, quisquam Italia cessit, nisi qui hunc inimicum sibi putat nec moherere hoc facio Reip, causa, quam funditus deletam puto: sed ne quis me putet ingravatum in eum, qui me levavit iis incommodis, quibus idem affectat: & simul, quod ea, quæ fiant, aut quæ certe futura sunt, 16 videre non possum etiam euidem s. e facta quædam jam puto: utinam in Volcati sententiam, sed quid refert? est enim una sententia omnium. 17 sed erit immittissimum Servius, qui filium misit ad 18 effigendum Cn. Pompejum, aut certe capiendum, cum Pontio Titiniano. eti hi quidem immori causa; 19 ille vero? sed fromachari desinamus, 20 & aliquando sententiam, ut nihil novi, nisi id, quod minimum vellem, spiritum reliquum esse. Nos quoniam superum mare obfuerat, infero navigabimus; & si Puteolis erit difficile, Crotonem petemus, aut Thurios, & boni cives, amantes patriæ, mare infestum habemus. aliam rationem hujus belligerandi nullam video. 21 in Aegyptum nos abdumus exercitu parés esse non possumus. pacis fides nulla est, sed haec latit-deplotata lunt. Tu velim litteras Cephalionis des de omnibus rebus artis, denique etiam de sermonibus hominum; nisi plane obmutuerint. Ego tuis consiliis usus sum, 22 maximeque quod gravissimum congredi nō tenuis, quam debui; & ad urbem urnon accedem, perseveravi. Quod superest, scribe, quæso, quam accuratissimè, & jam enim extrema sunt) quid placeat, quid censem: eti jam nulla dubitatio est, tamen, liquid, vel potius quidquid veniet in mente, scribas velim.

M. TVL-

1. Tendit fore reliqua, si in hū non veniremus.] Ita rescriptit Victorius, prius legerebat, tardius fore bellū quod cum in Siciliam usciamus. Faetus legebat, tardius fore vel. si nos non veniremus.

2. Conuicta.] Vulg. quid multa?

3. Et nolo adesse.] Vulg. et nolo adesse.

4. Dicendum sit, aut non veniendum.] Verba hæc aut non veniendum, possentur vulgo pot; illa plures, si adesse.

5. Non fuit negotium.] Ita Victorius cum antea legeretur, non fuit negotium.

6. Menari.] Amabilis liber Bessarion.

7. Utinam sit reliqua,] Vocem Graciam hic restituit Victorius, et ex Scio & Tornazl. & Cauell. summo consensu hæc ita latenter buss vulgo, quid? servis filius quid? in hū casum.

10. Malum.] Subiungit Boëius vocim ultimam τέλεσθαι στρυμόν.

11. Καρδεῖς.] Clausula. A Turnedo hanc emendationem se summis faceret Boëius, quæ fere modo legitur in Decurato & Tornazl. sumpto more suorum se ita restituisse. Vict. adorat antiquos codicis habet καρδεῖς, unde ille facit καρδεῖς, prius legebant καρδεῖς.

12. In Pedanum.] Vulgo in Petreianum.

13. ΑΛΑΤΕΥΣΑΝ, illam tuam.] Supple ὄργισσα, sive χελιδονice, garnientem avem, sive hirondinem. In Decurato erat

ΑΛΑΤΕΥΣΑΝ, ex quo ita rescriptit Boëius. Ceterum si hio

omnes omnium codicum varijs lectio[n]es referre volemus est & no[n]o & lectoris otio abici: præcipuas quadam recensebimus. Junius

sit Palat. mss. habere ΑΛΑΤΕΥΣΑΝ illam tuam. & ita etiam formis excusis liber habuit, quo usus est Victorius. Turnebus conjiciebat

αντεῖλαν. Laminus edidit ΑΛΑΤΕΥΣΑΝ & ait hanc esse conjecturam Boësi, sibi que valde probari. alii mss. habent

ΜΑΤΕΛΕΑΝ, alii ΜΑΛΤΕΥΣΑΝ, alii ΑΛΑΤΕΥΚΑΝ: alií aliter.

14. Tu (malum) inquieris.] Junius ex mss. Palat. tu malum, inquieris a Rom. &c.

15. Deletius habentur.] Vulg. habentur.

16. Vide utrū possim.] Ita mss. Boësi. vulg. posse.

17. Sed eris immiscimus.] Ita Victorii antiquus codex: Bessarion liber habet inquisit, non, modi præter Manutius.

18. Effigendum.] Ita Victorii mss. ille tamen retinet vulgatum, effigendum.

19. Ille verris fedis.] Et hujus loci restitutionem debemus: Victoria, sic enim antea legebatur, ille verris nra, sed &c.

20. Et aliquando ferentur, ut nihil novi.] Sic etiam rescriptit Florentinus, & delevit vocem seruimus, quæ possit sententiam legebatur.

21. In Aegyptum nos abdumus.] Faētus legebat abdumus.

22. Maximeque quid gravitatem.] Vulgo quid & gravitatem.